लाल–किताब जीवन चक्र

Name - Sample
Date - 10/08/1941
Time - 02:15:00
POB - New delhi (Delhi) India
Longitude - 077:12:00 E
Latitude - 028:36:00 N

Mindsutra Software Technologies
A-16, Ground Floor Uttam Nagar New Delhi - 110059
Phone: 011-49043166, 91 9818193410

© lalkitabnadi.com

श्री गणेशाय नमः

गणानां त्वां गणपतिं हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम् ।
ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ नः शृण्वन्नूतिभिः सीद सादनम् ।।

नवग्रह स्तोत्र

जपाकुसुमसंकाशं काश्पेयं महाद्युतिम्। तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्।।
दधिशंखतुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम्। नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम्।।
धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम्। कुमारं शक्तिहस्तं तं मंगलं प्रणमाम्यहम्।।
प्रियंगुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्। सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्।।
देवानां च ऋषिणां च गुरुं कांचनसंनिभम्। बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्।।
हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्। सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्।।
नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्। छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्।।
अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम्। सिंहिकागर्भसम्भूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम्।।
पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम्। रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम्।।

फलश्रुति

इति व्यासमुखोद्गीतं यः पठेत् सुसमाहितः।
दिवा वा यदि वा रात्रौ विघ्नशान्तिर्भविष्यति।
नरनारीनृपाणां च भवेद्दुःस्वप्ननाशम्।
ऐश्वर्यमतुलं तेषामारोग्यं पुष्टिवर्धनम्।।
ग्रहनक्षत्रजाः पीडस्तस्कराग्रिसमुद्रवाः ।
ताः सर्वाः प्रशमं यान्ति व्यासो ब्रूते न संशयः ।।

इति श्री व्यासविरचितं आदित्यादिनवग्रहस्तोत्रं संपूर्णम् ।।

जो जपापुष्प के समान अरुणिम आभावाले, महान तेज से संपन्न, अंधकार के विनाशक, सभी पापों को दूर करने वाले तथा महर्षि कश्यप के पुत्र हैं, उन सूर्य को मैं प्रणाम करता हूं। जो दधि, शंख तथा हिम के समान आभा वाले, क्षीर समुद्र से प्रादुर्भूत, भगवान शंकर के शिरोभूषण तथा अमृतस्वरुप हैं, उन चंद्रमा को मैं नमस्कार करता हूं। जो पृथ्वी देवी से उद्भूत, विद्युत् की कान्ति के समान प्रभावाले, कुमारावस्था वाले तथा हाथ में शक्ति लिए हुए हैं, उन मंगल को मैं प्रणाम करता हूं। जो प्रियंगु लता की कली के समान गहरे हरित वर्ण वाले, अतुलनीय सौन्दर्य वाले तथा सौम्य गुण से संपन्न हैं, उन चंद्रमा के पुत्र बुध को मैं प्रणाम करता हूं। जो देवताओं और ऋषियों के गुरु हैं, स्वर्णिम आभा वाले हैं, ज्ञान से संपन्न हैं तथा लोकों के स्वामी हैं, उन बृहस्पति जी को मैं नमस्कार करता हूं। जो हिम, कुन्दपुष्प तथा कमलनाल के तन्तु के समान श्वेत आभा वाले, दैत्यों के परम गुरु, सभी शास्त्रों के उपदेष्टा तथा महर्षि भृगु के पुत्र हैं, उन शुक्र को मैं प्रणाम करता हूं। जो नीले कज्जल के समान आभा वाले, सूर्य के पुत्र, यमराज के ज्येष्ठ भ्राता तथा सूर्य पत्नी छाया तथा मार्तण्ड से उत्पन्न हैं, उन शनैश्चर को मैं नमस्कार करता हूं। जो आधे शरीर वाले हैं, महान पराक्रम से संपन्न हैं, सूर्य तथा चंद्र को ग्रसने वाले हैं तथा सिंहिका के गर्भ से उत्पन्न हैं, उन राहु को मैं प्रणाम करता हूं। पलाश पुष्प के समान जिनकी आभा है, जो रुद्र स्वभाव वाले और रुद्र के पुत्र हैं, भयंकर हैं, तारकादि ग्रहों में प्रधान हैं, उन केतु को मैं प्रणाम करता हूं। भगवान वेदव्यास जी के मुख से प्रकट इस स्तुति का जो दिन में अथवा रात में एकाग्रचित्त होकर पाठ करता है, उसके समस्त विघ्न शान्त हो जाते हैं, स्त्री–पुरुष और राजाओं के दुःस्वप्नों का नाश हो जाता है। पाठ करने वालों को अतुलनीय ऐश्वर्य और आरोग्य प्राप्त होता है तथा उनके पुष्टि की वृद्धि होती है।

ज्योतिष सारिणी

मुख्य विवरण

लिंग	पुरूष
जन्म दिनांक	10:08:1941
जन्म समय	02:15:00
जन्म दिन	रविवार
जन्म स्थान	new delhi
राज्य	Delhi
देश	India
अक्षांश	028:36:00N
रेखांश	077:12:00E
स्थानीय समय संस्कार	-000:21:11
स्थानीय समय	001:53:48 hrs
समय क्षेत्र	05:30 E
समय संशोधन	-00:00
सांपातिक काल	023:05:35 hrs
इष्ट काल	51: 03: 50 Ghati

पंचांग विवरण

विक्रम संवत	1998
शक संवत	1863
संवत्सर	वृष
ऋतु	वर्षा
मास	भाद्र
पक्ष	कृष्ण
वार	
तिथि	तृतीया
नक्षत्र (पद)	पूर्वाभाद (2)
योग	अतिगण्ड
करन	विष्टी

अवकहड़ा चक्र

पाया	रजत
वर्ण	शुद्र
वश्य	जलचर
योनि	शेर (पु०)
गण	मनुष्य
नाड़ी	आदि
रज्जु	नाभि
तत्व	आकाश
तत्वाधिपति	बृहस्पति
विहग	मयूर
नाड़ी पद	मध्य
वेध	उत्तरफाल्गु
आद्याक्षर	सा
दशा बैलेंस	बृहस्पति–९ .० व .1 .0 म .11 द .
वर्तमान दशा	चन्द्र–शनि–केतु
भयात	26: 58: 05 Ghati
भभोग	63: 13: 54 Ghati
सूर्य राशि (वैदिक)	कर्क
सूर्य राशि (पाश्चात्य)	सिहं
अयनांश	N.C.Lahiri
अयनांश मान	023:02:29
देकानेट	2
फेस	IV
सूर्योदय	05:50:28AM
सूर्यास्त	07:02:42PM
जन्मदिन का ग्रह	सूर्य
जन्मसमय का ग्रह	शनि

♊ **लग्न** मिथुन	♒ **राशि** कुम्भ	**नक्षत्र – पद** पूर्वाभाद – 2
☿ **लग्नाधिपति** बुध	♄ **राशिपति** शनि	♃ **नक्षत्रपति** बृहस्पति

घात चक्र

चैत्र अशुभ मास	वृहस्पतिवार अशुभ वार	3 अशुभ प्रहर
धनु अशुभ राशि	कन्या अशुभ लग्न	3, 8, 13 अशुभ तिथि
अरिद्रा अशुभ नक्षत्र	ब्याधात अशुभ योग	किम्सतुघ्न अशुभ करन

शुभ बिन्दु

1 मूलांक	6 भाग्यांक	3, 9 मित्रांक
1, 8 शत्रु अंक	18, 21, 24, 27, 30, 33, 36, 39 शुभ वर्ष	बुधवार, शुक्रवार, शनिवार शुभ दिन
बुध, शुक्र, शनि शुभ ग्रह	बृहस्पति अशुभ ग्रह	वृष, सिहं, तुला, धनु मित्र राशि
कन्या, धनु, कुम्भ, मेष मित्र लग्न	पन्ना शुभ रत्न	पन्नी, संगपन्ना, मरगज शुभ उपरत्न
नीलम भाग्य रत्न	गणेश अनुकूल देवता	कांसा शुभ धातु
हरित शुभ रंग	उत्तर दिशा	सूर्योदय के 2 घंटे बाद शुभ समय
शक्कर, हाथीदांत, कपूर, फल शुभ पदार्थ	मूंग (साबुत) शुभ अन्न	घी शुभ द्रब्य

ग्रह स्थिति (पराशरी)

सूर्य	कर्क	23:47:42	अश्लेषा (3)	मित्र राशि
चन्द्रमा	कुम्भ	25:44:26	पूर्वाभाद (2)	सम राशि
मंगल	मीन	25:32:30	रेवती (3)	मित्र राशि
बुध (अ.)	कर्क	14:00:17	पुष्य (4)	शत्रु राशि
बृहस्पति	वृष	22:48:58	रोहिणी (4)	शत्रु राशि
शुक्र	सिहं	23:31:29	पुर्वफाल्ग (4)	स्व नक्षत्र
शनि	वृष	04:37:01	कृतिका (3)	मित्र राशि
राहु	कन्या	01:26:07	उत्तरफाल्ग (2)	मित्र राशि
केतु	मीन	01:26:07	पूर्वाभाद (4)	सम राशि
र्हाल	वृष	07:00:34	कृतिका (4)	सम राशि
नेपच्यून	कन्या	02:55:44	उत्तरफाल्ग (2)	सम राशि
प्लूटो	कर्क	11:15:04	पुष्य (3)	सम राशि
लग्न	मिथुन	07:01:34	अरिद्रा (1)	....
10वां कस्प	मीन	22:11:00	पूर्वाभाद (1)	....

ग्रह स्थिति (पराशरी)

	ग्रह	व/अ		राशि	अंश	नक्षत्र	पद	कारक	विशेष
AC	लग्न		♊	मिथुन	07:01:34	अरिद्रा (6)	1		
☉	सूर्य		♋	कर्क	23:47:42	अश्लेषा (9)	3	भ्रात्रि	मित्र राशि
☽	चन्द्रमा		♒	कुम्भ	25:44:26	पूर्वाभाद (25)	2	आत्म	सम राशि
♂	मंगल		♓	मीन	25:32:30	रेवती (27)	3	अमात्य	मित्र राशि
☿	बुध	अ.	♋	कर्क	14:00:17	पुष्य (8)	4	ज्ञाति	शत्रु राशि
♃	बृहस्पति		♉	वृष	22:48:58	रोहिणी (4)	4	अपत्या	शत्रु राशि
♀	शुक्र		♌	सिहं	23:31:29	पुर्वफाल्ग (11)	4	मात्रि	स्व नक्षत्र
♄	शनि		♉	वृष	04:37:01	कृतिका (3)	3	दारा	मित्र राशि
☊	राहु		♍	कन्या	01:26:07	उत्तरफाल्ग (12)	2		मित्र राशि
☋	केतु		♓	मीन	01:26:07	पूर्वाभाद (25)	4		सम राशि
♅	हर्षल		♉	वृष	07:00:34	कृतिका (3)	4		सम राशि
♆	नेपच्यून		♍	कन्या	02:55:44	उत्तरफाल्ग (12)	2		सम राशि
♇	प्लूटो		♋	कर्क	11:15:04	पुष्य (8)	3		सम राशि

लग्न कुण्डली

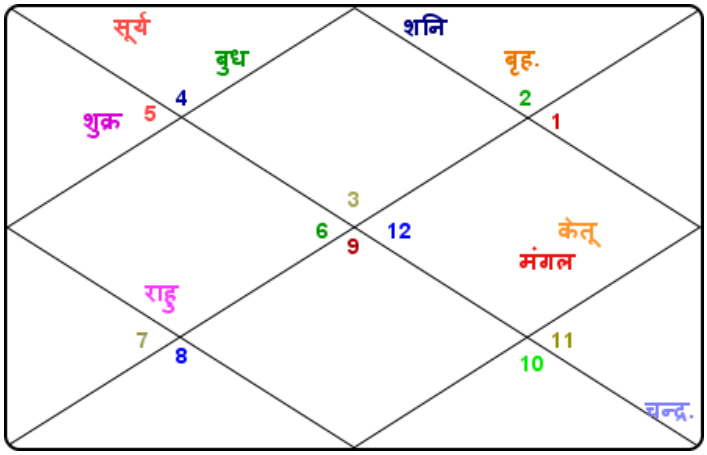

नवांश कुण्डली

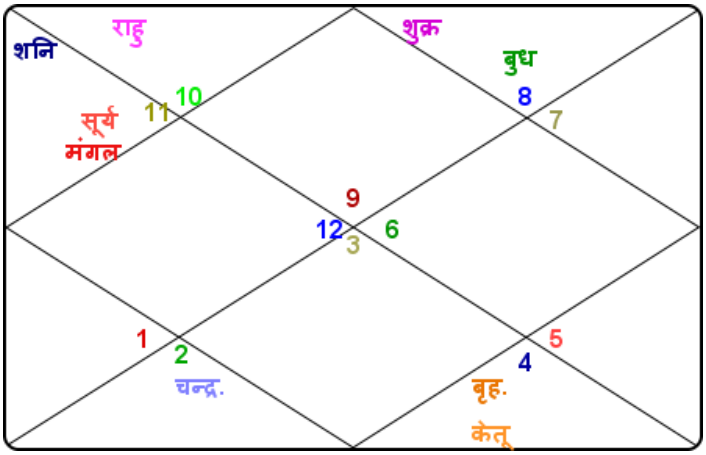

लाल किताब में ग्रह

सूर्य

भाव न. 2, कायम, जन्मदिन का, शत्रु के घर में, शुभ भाव में

चन्द्रमा

भाव न. 9, शुभ भाव में

मंगल

भाव न. 10, उच्चस्थ, शुभ भाव में

बुध

भाव न. 2, स्वभाव (शुक्र), किस्मत का, कायम, मित्र के घर में, शुभ भाव में, साथी (शुक्र)

बृहस्पति

भाव न. 12, अपने घर का, पितृ ऋण, शुभ भाव में

शुक्र

भाव न. 3, स्त्री ऋण, मित्र के घर में, शुभ भाव में, साथी (बुध)

शनि

भाव न. 12, बद स्वभाव, जन्मसमय का, जालीमाना ऋण, ार्मी, शुभ भाव में

राहु

भाव न. 4, ार्मी, अशुभ भाव में

केतु

भाव न. 10, राशिफल, शुभ भाव में

ग्रह स्थिति (लाल किताब)

लाल किताब टेवा

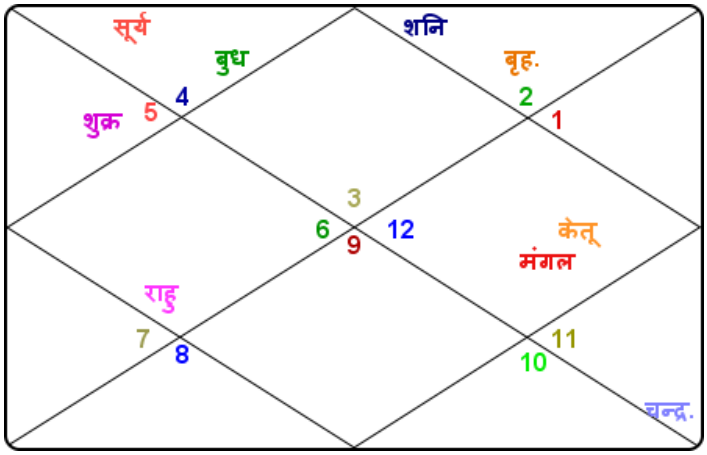

लाल किताब चन्द्र कुण्डली

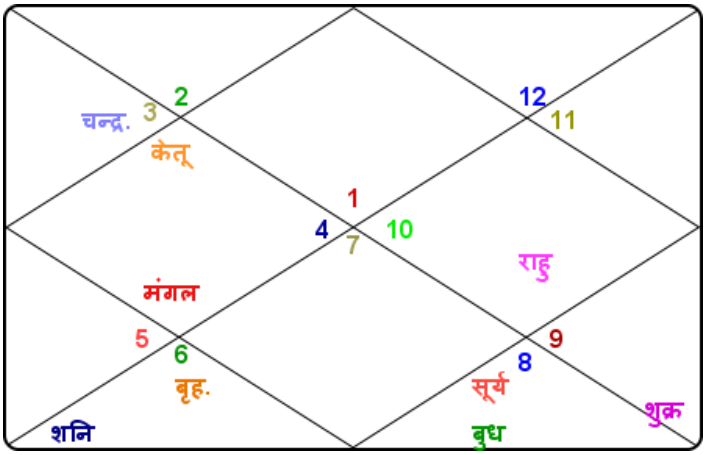

ग्रह योग

सूर्य, बुध	(युति), मंगल (नेक), औलाद जिंदा रखने का मालिक
बुध, शुक्र	(साझी दिवार), सूर्य, स्वास्थ्य / सेहत

ग्रह दृष्टि (लाल किताब)

ग्रह	मुख्य	मददगार	टकराव	बुनियाद	दुश्मन (धोखा)	साझी दिवार	अचानक चोट
सूर्य			चन्द्रमा	मंगल, केतु		शुक्र	बृहस्पति, शनि, राहु
चन्द्रमा			राहु			मंगल, केतु	
मंगल		सूर्य, बुध					बृहस्पति, शनि
बुध			चन्द्रमा	मंगल, केतु		शुक्र	बृहस्पति, शनि, राहु
बृहस्पति		राहु			चन्द्रमा		सूर्य, मंगल, बुध, केतु
शुक्र	चन्द्रमा(50)		मंगल, केतु		बृहस्पति, शनि	राहु	
शनि		राहु			चन्द्रमा		सूर्य, मंगल, बुध, केतु
राहु	मंगल(100), केतु(100)			बृहस्पति, शनि			सूर्य, बुध
केतु		सूर्य, बुध					बृहस्पति, शनि

D-16 षोडश वर्ग कुण्डली

जन्म/लग्न कुण्डली (डी 1)

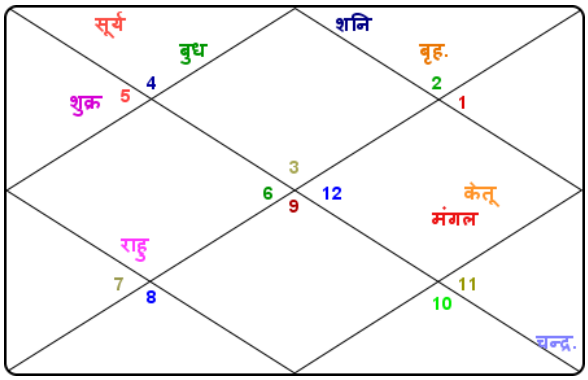

जन्मकुण्डली या लग्न कुण्डली एक व्यक्ति के जीवन की एक विस्तृत तस्वीर है। यह 12 घरों में विभाजित है जो जीवन के विभिन्न पहलुओं का प्रतिनिधित्व करते हैं, प्रत्येक घर एक अलग राशि और ग्रह द्वारा नियंत्रित होता है। विभिन्न घरों में ग्रहों और राशियों के स्थान और परस्पर क्रिया का मूल्यांकन करके, कुण्डली किसी के व्यक्तित्व, रिश्तों, नौकरी, धन और सामान्य जीवन पथ में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।

होरा कुण्डली (डी 2)

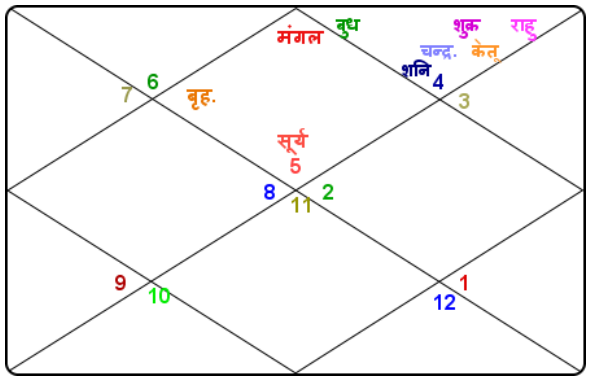

होरा कुण्डली मुख्य जन्म कुण्डली से निर्मित एक विभागीय कुण्डली है जिसका उपयोग समृद्धि और वित्तीय संभावनाओं को निर्धारित करने के लिए किया जाता है। यह जन्म कुंडली में प्रत्येक राशि को आधे में विभाजित करता है, जिसमें सूर्य पहले अर्द्ध भाग पर शासन करता है और चंद्रमा दूसरे पर शासन करता है। ज्योतिषी ग्रहों की स्थिति और होरा कुण्डली के भीतर उनके संबंध या संयोजन का मूल्यांकन करके जीवन भर धन और वित्तीय स्थिरता प्राप्त करने के लिए किसी व्यक्ति की क्षमता का अनुमान लगा सकते हैं।

द्रेष्काण कुण्डली (डी 3)

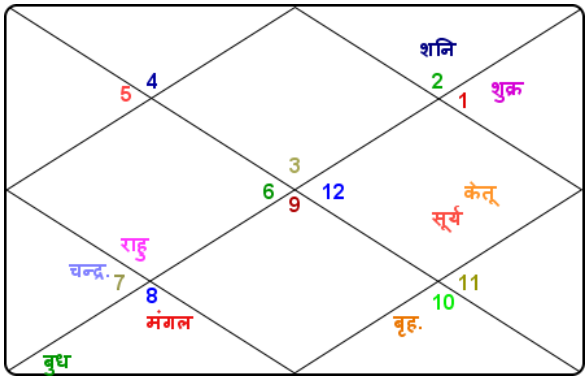

द्रेक्कन कुण्डली, प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 3 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक 10 डिग्री माप का होता है। इस कुण्डली का उपयोग किसी के जीवन पर उसके भाई--बहनों, चचेरे भाई--बहनों और अन्य करीबी रिश्तेदारों के प्रभाव का आकलन करने के लिए किया जाता है। यह एक व्यक्ति की संचार क्षमता, छोटी यात्रा और साहस पर अंतर्दृष्टि भी देता है, जिससे ज्योतिषियों को किसी व्यक्ति के जीवन के इन क्षेत्रों का अधिक से अधिक ज्ञान प्राप्त करने में सहायता मिलती है।

चतुर्थांश कुण्डली (डी 4)

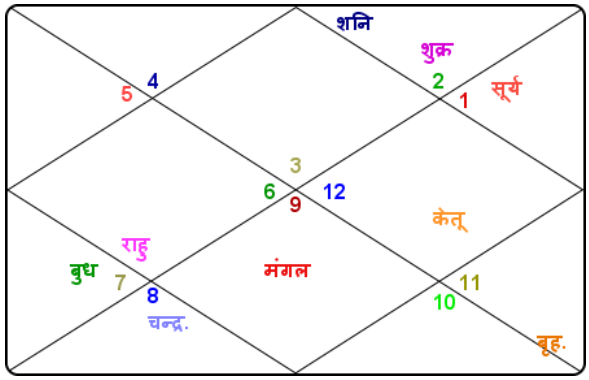

चतुर्थांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 4 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक 7.5 डिग्री तक फैला हुआ है। इस कुण्डली का उपयोग बड़े पैमाने पर किसी व्यक्ति के घर, जमीन और अoटोमोबाइल के संबंध में उसकी खुशी, संपत्ति और भाग्य का मूल्यांकन करने के लिए किया जाता है। यह किसी व्यक्ति की सुरक्षा, भावनात्मक कल्याण, और उनकी मां या मातृभाषा के साथ संबंध में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है, ज्योतिषियों को किसी व्यक्ति के जीवन के इन क्षेत्रों के बारे में बेहतर ज्ञान प्राप्त करने में सहायता करता है।

सप्तमांश कुण्डली (डी 7)

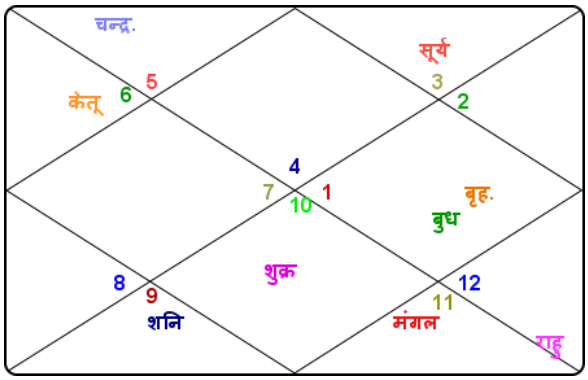

सप्तांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो मुख्य जन्म कुण्डली के प्रत्येक चिन्ह को 7 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक का माप लगभग 4.29 डिग्री है। इस कुण्डली का उपयोग सामान्यतः किसी व्यक्ति के जीवन में संतान, प्रजनन क्षमता और प्रसव से संबंधित मुद्दों का आकलन करने के लिए किया जाता है। यह ज्योतिषियों को किसी व्यक्ति के स्वास्थ्य, कल्याण और बच्चों से उत्पन्न होने वाले सामान्य आनंद के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करता है, साथ ही साथ किसी व्यक्ति के बच्चों की संख्या के बारे में अंतर्दृष्टि भी प्रदान करता है।

नवांश कुण्डली (डी 9)

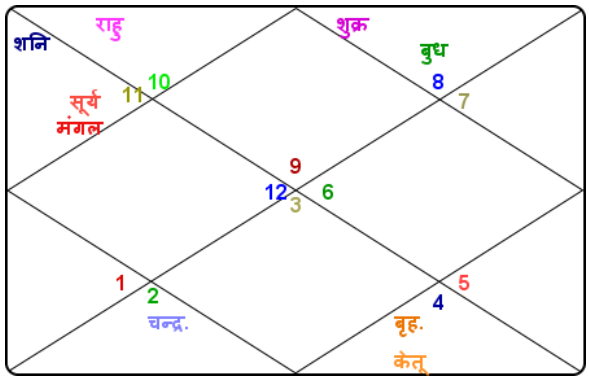

नवांश कुण्डली वैदिक ज्योतिष में एक महत्वपूर्ण संभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 9 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक का माप 3.20 डिग्री है। इस कुण्डली का उपयोग बड़े पैमाने पर ग्रहों की ताकत और कमजोरियों, वैवाहिक जीवन की गुणवत्ता और किसी के जीवनसाथी की प्रकृति का निर्धारण करने के लिए किया जाता है। यह किसी व्यक्ति के आध्यात्मिक विकास और आकांक्षाओं की पूर्ति में गहरी अंतर्दृष्टि भी देता है, जिससे ज्योतिषियों के लिए व्यक्ति के जीवन के कई क्षेत्रों को समझने में यह एक महत्वपूर्ण उपकरण बन जाता है।

दशमांश कुण्डली (डी 10)

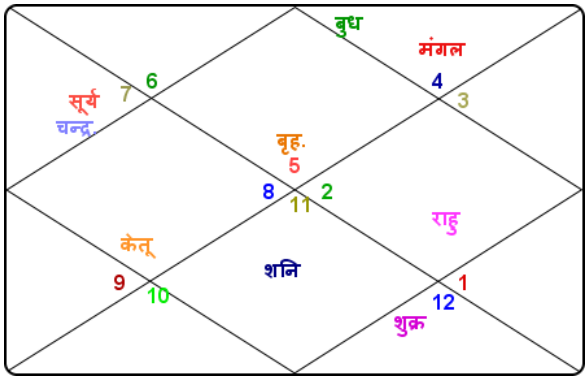

दशमांश कुण्डली एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 10 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक को 3 डिग्री मापता है। इस कुण्डली का उपयोग अधिकांशतः किसी व्यक्ति के करियर, पेशे और समग्र व्यावसायिक उपलब्धि का आकलन करने के लिए किया जाता है। यह ज्योतिषियों को पेशेवर प्रगति और सफलता के लिए मार्गदर्शन प्रदान करने के साथ--साथ सर्वोत्तम कार्य मार्ग, संभावित उन्नति और कार्यस्थल की बाधाओं के बारे में जानकारी देता है।

द्वादशांश कुण्डली (डी 12)

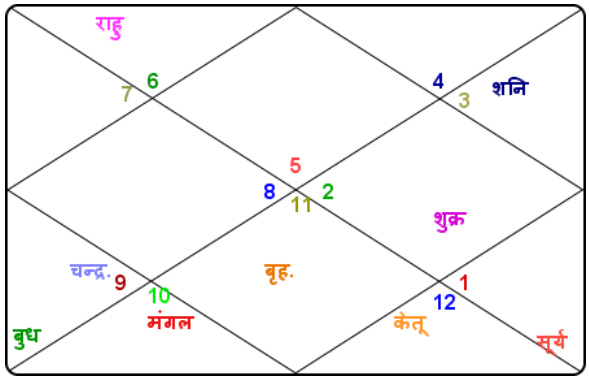

द्वादशांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 12 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक को 2.5 डिग्री में मापता है। इस कुण्डली का उपयोग आम तौर पर किसी व्यक्ति के माता--पिता, पूर्वजों और पारिवारिक वंश के मुद्दों की जांच करने के लिए किया जाता है। यह एक व्यक्ति के माता--पिता, विरासत और पारिवारिक कर्म के साथ एक व्यक्ति के संबंध को प्रकट करता है, ज्योतिषियों को एक व्यक्ति के जीवन के इन महत्वपूर्ण क्षेत्रों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करता है।

षोडशांश कुण्डली (डी 16)

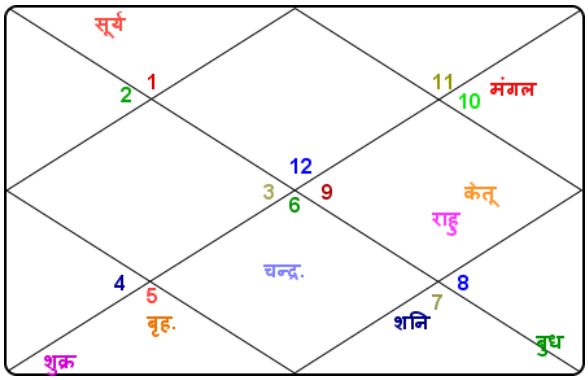

षोडशांश कुण्डली एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 16 बराबर टुकड़ों में विभाजित करता है, प्रत्येक का माप 1.875 डिग्री है। इस कुण्डली का उपयोग बड़े पैमाने पर किसी व्यक्ति के अoटोमोबाइल, आराम और विलासिता की विशेषताओं की जांच करने के लिए किया जाता है। यह किसी व्यक्ति की वाहन, अचल संपत्ति, और अन्य वस्तुओं को हासिल करने और बनाए रखने की क्षमता को प्रकट करता है जो उनके जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाता है, जिससे ज्योतिषियों को किसी व्यक्ति के अस्तित्व के इन विशिष्ट पहलुओं को समझने में सहायता मिलती है।

विशांश कुण्डली (डी 20)

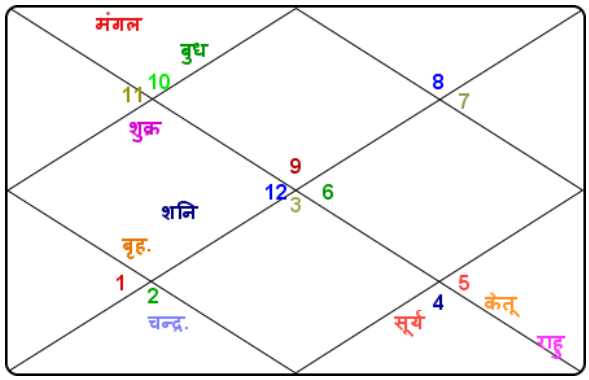

विशांश कुण्डली एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 20 बराबर टुकड़ों में विभाजित करता है, प्रत्येक को 1.5 डिग्री मापता है। इस कुण्डली का उपयोग बड़े पैमाने पर किसी व्यक्ति के आध्यात्मिक विकास, धार्मिक प्राथमिकताओं और अधिक ज्ञान की खोज का विश्लेषण करने के लिए किया जाता है। यह किसी व्यक्ति के अंतर्रात्मा, आध्यात्मिक क्षमता और उनके जीवन में धर्म और आध्यात्मिकता के महत्व के बारे में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है, जिससे ज्योतिषियों को किसी व्यक्ति के जीवन के इन तत्वों का पता लगाने में सहायता मिलती है।

चर्तुविंशांश कुण्डली (डी 24)

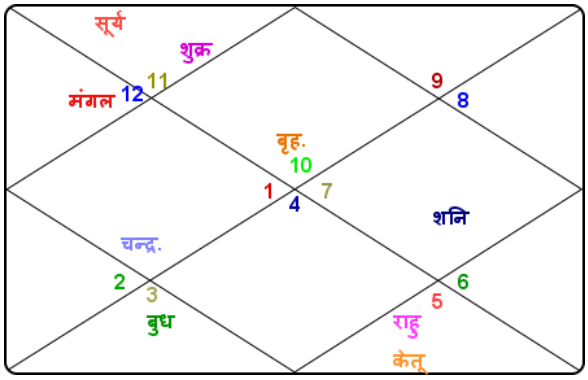

चर्तुविंशांश कुण्डली एक विभाजन कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 24 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक की माप 1.25 डिग्री है। इस कुण्डली का उपयोग आमतौर पर किसी व्यक्ति की शिक्षा, प्रतिभा और सीखने की क्षमता का आकलन करने के लिए किया जाता है। यह कुछ विषयों, विशेषज्ञता के क्षेत्रों और शैक्षिक उपलब्धि के लिए एक व्यक्ति की योग्यता को प्रकट करता है, ज्योतिषियों को अकादमिक उन्नति प्राप्त करने और बौद्धिक क्षमता तक पहुंचने के लिए मागदर्शन प्रदान करने की अनुमति देता है।

सप्तविंशांश कुण्डली (डी 27)

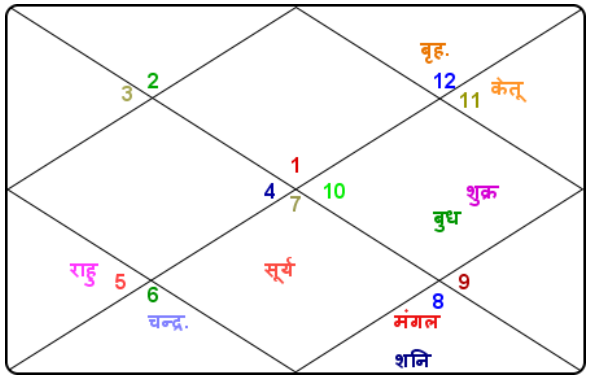

सप्तविंशांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 27 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक का माप 1.11 डिग्री है। इस कुण्डली का उपयोग मुख्य रूप से किसी व्यक्ति के नक्षत्रों या चंद्र राशियों की ताकत और उनके जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव का आकलन करने के लिए किया जाता है। यह ज्योतिषियों को व्यक्ति के स्वभाव, आचरण और अंतर्निहित नक्षत्रों से प्रभावित जीवन की घटनाओं के बारे में अंतर्दृष्टि प्रदान करके व्यक्ति के भाग्य और आध्यात्मिक झुकाव के बारे में बेहतर ज्ञान देता है।

त्रिंशांश कुण्डली (डी 30)

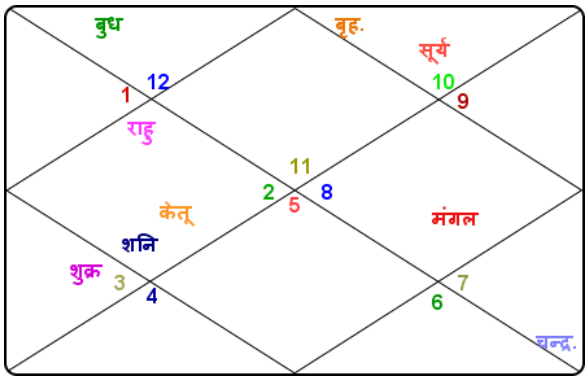

त्रिशांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 30 बराबर टुकड़ों में विभाजित करता है, प्रत्येक को एक डिग्री में मापता है। इस कुण्डली का उपयोग ज्यादातर उन कई कठिनाइयों और आपदाओं का आकलन करने के लिए किया जाता है जो एक व्यक्ति अपने जीवन के दौरान अनुभव कर सकता है। यह एक व्यक्ति की छिपी ताकत, कमजोरियों और उनकी कठिनाइयों के स्रोत को प्रकट करता है, जिससे ज्योतिषियों को बाधाओं पर काबू पाने और जीवन के कई पहलुओं में कठिनाइयों का सामना करने हेतु मार्गदर्शन करने में सहायता मिलती है।

खवेदांश कुण्डली (डी 40)

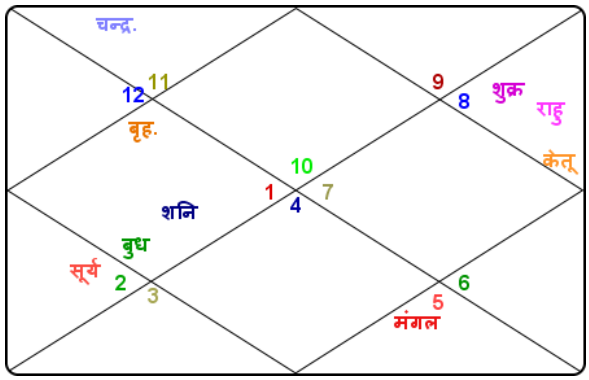

खवेदांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 40 बराबर टुकड़ों में विभाजित करता है, प्रत्येक को 0.75 डिग्री मापता है। इस कुण्डली का उपयोग आम तौर पर किसी व्यक्ति की समग्र भलाई और शुभता की गहरी समझ प्राप्त करने के लिए किया जाता है। यह किसी व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक स्वास्थ्य के साथ--साथ उनके समग्र सुख और समृद्धि के बारे में जानकारी प्रदान करता है, जिससे ज्योतिषियों को जीवन की गुणवत्ता में सुधार करने और एक सामंजस्यपूर्ण जीवन शैली प्राप्त करने के बारे में सलाह देने की अनुमति मिलती है।

अक्षवेदांश कुण्डली (डी 45)

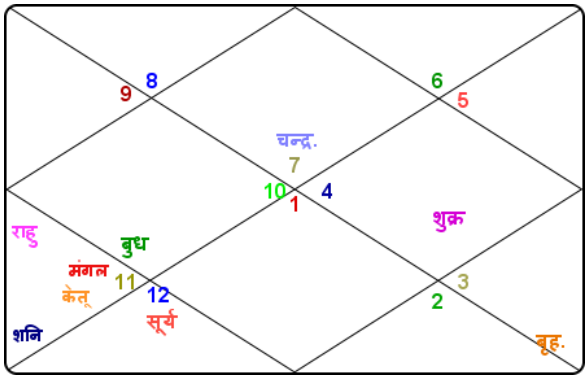

अक्षवेदांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 45 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक का माप 0.67 डिग्री है। इस कुण्डली का उपयोग अधिकांशतः किसी व्यक्ति के आध्यात्मिक और दिव्य गुणों का आकलन करने के लिए उपयोग किया जाता है। यह एक व्यक्ति की प्रा.तिक आध्यात्मिक क्षमता, दैवीय आशीर्वाद और आध्यात्मिक विकास स्तर को प्रकट करता है, जिससे ज्योतिषियों को आध्यात्मिक विकास में उन्नति और जागरूकता के उच्च स्तर की प्राप्ति हेतु मार्गदर्शन करने में सहायता मिलती है।

षष्ठांश कुण्डली (डी 60)

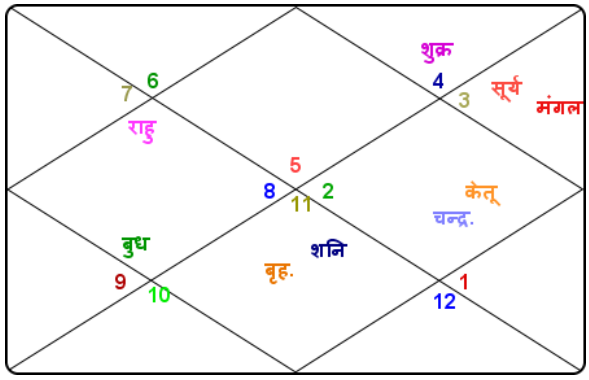

षष्ठांश कुण्डली, एक विभाजन कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 60 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक को 0.5 डिग्री मापता है। यह कुण्डली अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है और इसका उपयोग मुख्य रूप से किसी व्यक्ति के जीवन को प्रभावित करने वाले सबसे गहरे कर्म प्रभावों को प्रकट करने के लिए किया जाता है। यह एक व्यक्ति के पूर्व जीवन के कर्मों, अव्यक्त झुकावों और उनकी गतिविधियों के सूक्ष्म प्रभावों को प्रकट करता है, जिससे ज्योतिषियों को कर्म असंतुलन को ठीक करने और अत्यधिक संतोषप्रद जीवन जीने का मार्गदर्शन करने में सहायता मिलती है।

षडबल और भावबल

षड्बल

बल का नाम	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि
उच्च बल	25.4	37.58	40.82	39.67	45.94	11.16	4.87
सप्त वर्ग बल	86.25	78.75	135	45	86.25	91.88	131.25
युग्म अयुग्म बल	15	15	15	0	0	15	15
केन्द्रादी बल	30	15	60	30	15	15	15
द्रेक्कन बल	0	15	0	15	0	15	0
स्थान बल	**156.65**	**161.33**	**250.82**	**129.67**	**147.19**	**148.03**	**166.12**
वांछित स्थान बल	165	133	96	165	165	133	96
वांछित अंश	94.94	121.3	261.27	78.59	89.21	111.3	173.04
दिग बल	**9.46**	**1.19**	**48.88**	**47.67**	**55.26**	**59.55**	**10.8**
वांछित दिग बल	35	50	30	35	35	50	30
वांछित अंश	27.04	2.37	162.94	136.21	157.9	119.11	36.01
नतोन्नत बल	50.92	9	9	50.92	60	50.92	9
पक्ष बल	10.65	49.35	10.65	10.65	49.35	49.35	10.65
त्रिभाग बल	0	0	60	0	60	0	0
वर्ष बल	0	0	0	0	15	0	0
मास बल	0	0	0	0	0	0	30
दिन बल	45	0	0	0	0	0	0
होरा बल	0	0	0	0	0	0	60
अयन बल	49.31	35.07	38.71	52.63	58.04	36.17	4.9
युद्ध बल	0	0	0	0	0	0	0
काल बल	**155.88**	**93.42**	**118.36**	**114.19**	**242.39**	**136.44**	**114.54**
वांछित काल बल	112	100	67	112	112	100	67
वांछित अंश	139.18	93.42	176.66	101.96	216.42	136.44	170.96
चेष्टा बल	**49.31**	**49.35**	**15**	**0**	**30**	**45**	**30**
वांछित चेष्टा बल	50	30	40	50	50	30	40
वांछित अंश	98.62	164.51	37.5	0	60	150	75
नैसर्गिक बल	**60**	**51.43**	**17.14**	**25.71**	**34.29**	**42.86**	**8.57**
द्रिक बल	**-27.75**	**4.52**	**9.77**	**-30.32**	**-10.21**	**-10.93**	**-2.21**
कुल षड्बल	**403.55**	**361.24**	**459.98**	**286.92**	**498.91**	**420.95**	**327.83**
षड्बल (रूप में)	**6.73**	**6.02**	**7.67**	**4.78**	**8.32**	**7.02**	**5.46**
न्यूनतम वांछनिय	390	360	300	420	390	330	300
वांछित अंश	103.47	100.35	153.33	68.32	127.93	127.56	109.28
तुलनात्मक स्थिति	**4**	**5**	**2**	**7**	**1**	**3**	**6**
इष्ट फल	**33.58**	**43.07**	**24.74**	**0**	**37.12**	**22.41**	**12.09**
कष्ट फल	**26.42**	**16.93**	**35.26**	**60**	**22.88**	**37.59**	**47.91**
दिप्ति बल	**100**	**49.35**	**39.42**	**20.98**	**20.33**	**37.95**	**26.39**

भावबल

भाव सँख्या	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भाव राशि	मिथुन	कर्क	सिहं	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष
भावाधिपति बल	286.92	361.24	361.24	403.55	286.92	459.98	498.91	327.83	327.83	327.83	498.91	420.95
भाव दिग्बल	60	40	10	30	20	50	0	40	20	0	50	40
भाव दृष्टिबल	-3.82	-14.87	-16.1	-3.5	10.83	-21.04	-16.76	-11.59	8.25	9.53	5.25	3.64
भावबल योग	343.1	386.37	355.14	430.05	317.75	488.94	482.16	356.24	356.08	337.36	554.16	464.59
भावबल (रूप में)	5.72	6.44	5.92	7.17	5.3	8.15	8.04	5.94	5.93	5.62	9.24	7.74
तुलनात्मक स्थिति	10	6	9	5	12	2	3	7	8	11	1	4

विंशोत्तरी दशा (1)

बृहस्पति (9.0 व.1.0 म.11 द.)

दशा बैलेंश

N.C.Lahiri (023:02:29)

Ayanamsha

बृहस्पति (16 वर्ष)

10/08/1941 To 19/09/1950

बारहवें	वृष	शत्रु
भाव	राशि	संबंन्ध
	रोहिणी (4)	7 , 10
विशेष	नक्षत्र	भावपति
बृहस्पति	-------	-------
शनि	-------	-------
बुध	26-08-1941	00.00
केतु	02-08-1942	00.04
शुक्र	02-04-1945	00.98
सूर्य	19-01-1946	03.64
चन्द्रमा	21-05-1947	04.44
मंगल	26-04-1948	05.78
राहु	19-09-1950	06.71

शनि (19 वर्ष)

19/09/1950 To 19/09/1969

बारहवें	वृष	मित्र
भाव	राशि	संबंन्ध
	कृतिका (3)	8 , 9
विशेष	नक्षत्र	भावपति
शनि	22-09-1953	09.11
बुध	01-06-1956	12.12
केतु	11-07-1957	14.81
शुक्र	10-09-1960	15.92
सूर्य	23-08-1961	19.09
चन्द्रमा	24-03-1963	20.04
मंगल	02-05-1964	21.62
राहु	09-03-1967	22.73
बृहस्पति	19-09-1969	25.58

बुध (17 वर्ष)

19/09/1969 To 19/09/1986

दूसरे	कर्क	शत्रु
भाव	राशि	संबंन्ध
अस्त	पुष्य (4)	1 , 4
विशेष	नक्षत्र	भावपति
बुध	15-02-1972	28.11
केतु	12-02-1973	30.52
शुक्र	13-12-1975	31.51
सूर्य	19-10-1976	34.34
चन्द्रमा	21-03-1978	35.19
मंगल	18-03-1979	36.61
राहु	04-10-1981	37.60
बृहस्पति	10-01-1984	40.15
शनि	19-09-1986	42.42

केतु (7 वर्ष)

19/09/1986 To 19/09/1993

दसवें	मीन	सम
भाव	राशि	संबंन्ध
वक्री	पूर्वाभाद (4)	
विशेष	नक्षत्र	भावपति
केतु	15-02-1987	45.11
शुक्र	16-04-1988	45.52
सूर्य	22-08-1988	46.69
चन्द्रमा	24-03-1989	47.04
मंगल	20-08-1989	47.62
राहु	07-09-1990	48.03
बृहस्पति	14-08-1991	49.08
शनि	22-09-1992	50.01
बुध	19-09-1993	51.12

शुक्र (20 वर्ष)

19/09/1993 To 19/09/2013

तीसरे	सिहं	शत्रु
भाव	राशि	संबंन्ध
स्वनक्षत्र	पुर्वफाल्ग (4)	12 , 5
विशेष	नक्षत्र	भावपति
शुक्र	19-01-1997	52.11
सूर्य	19-01-1998	55.44
चन्द्रमा	19-09-1999	56.44
मंगल	19-11-2000	58.11
राहु	19-11-2003	59.28
बृहस्पति	20-07-2006	62.28
शनि	19-09-2009	64.94
बुध	20-07-2012	68.11
केतु	19-09-2013	70.94

सूर्य (6 वर्ष)

19/09/2013 To 19/09/2019

दूसरे	कर्क	मित्र
भाव	राशि	संबंन्ध
	अश्लेषा (3)	3
विशेष	नक्षत्र	भावपति
सूर्य	07-01-2014	72.11
चन्द्रमा	08-07-2014	72.41
मंगल	13-11-2014	72.91
राहु	07-10-2015	73.26
बृहस्पति	26-07-2016	74.16
शनि	08-07-2017	74.96
बुध	14-05-2018	75.91
केतु	19-09-2018	76.76
शुक्र	19-09-2019	77.11

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

विंशोत्तरी दशा (2)

चन्द्रमा (10 वर्ष)		
19/09/2019 To 19/09/2029		
नौवें	कुम्भ	सम
भाव	राशि	संबंन्ध
	पूर्वाभाद (2)	2
विशेष	नक्षत्र	भावपति
चन्द्रमा	20-07-2020	78.11
मंगल	18-02-2021	78.94
राहु	20-08-2022	79.53
बृहस्पति	19-12-2023	81.03
शनि	20-07-2025	82.36
बुध	19-12-2026	83.94
केतु	20-07-2027	85.36
शुक्र	21-03-2029	85.94
सूर्य	19-09-2029	87.61

मंगल (7 वर्ष)		
19/09/2029 To 19/09/2036		
दसवें	मीन	मित्र
भाव	राशि	संबंन्ध
	रेवती (3)	11 , 6
विशेष	नक्षत्र	भावपति
मंगल	15-02-2030	88.11
राहु	05-03-2031	88.52
बृहस्पति	09-02-2032	89.57
शनि	21-03-2033	90.50
बुध	18-03-2034	91.61
केतु	14-08-2034	92.60
शुक्र	14-10-2035	93.01
सूर्य	18-02-2036	94.18
चन्द्रमा	19-09-2036	94.53

राहु (18 वर्ष)		
19/09/2036 To 19/09/2054		
चौथे	कन्या	मित्र
भाव	राशि	संबंन्ध
वक्री	उत्तरफाल्ग (2)	
विशेष	नक्षत्र	भावपति
राहु	02-06-2039	95.11
बृहस्पति	26-10-2041	97.81
शनि	01-09-2044	100.21
बुध	21-03-2047	103.06
केतु	07-04-2048	105.61
शुक्र	08-04-2051	106.66
सूर्य	02-03-2052	109.66
चन्द्रमा	01-09-2053	110.56
मंगल	19-09-2054	112.06

वर्तमान दशा/अन्तर/प्रत्यन्तर/ सूक्ष्म/ प्राण दशा

दशा	ग्रह	आरम्भ	समाप्त
महादशा	चन्द्रमा	19:09:2019 (16:52:31)	19:09:2029 (16:52:31)
अन्तर्दशा	शनि	19:12:2023 (22:52:31)	20:07:2025 (20:52:31)
प्रत्यन्तर्दशा	केतु	10:06:2024 (18:32:56)	14:07:2024 (13:50:56)
सूक्ष्मदशा	सूर्य	18:06:2024 (09:05:29)	20:06:2024 (01:39:23)
प्राणदशा	शनि	19:06:2024 (04:21:36)	19:06:2024 (10:46:58)

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

विंशोत्तरी दशा ग्रहों की अवधि के निर्धारण के लिए वैदिक ज्योतिष में प्रयुक्त एक प्रणाली है, जिसे एक व्यक्ति के जीवन में दशा के रूप में भी जाना जाता है। 'विंशोत्तरी' शब्द का अर्थ संस्कृत में '120' है, जो सभी ग्रहों की अवधि के एक पूर्ण चक्र में वर्षों की कुल संख्या का प्रतिनिधित्व करता है।

यह दशा किसी व्यक्ति के जन्म के समय चंद्रमा की स्थिति पर आधारित है, और यह वैदिक ज्योतिष के नौ ग्रहों में से प्रत्येक को निश्चित अवधि प्रदान करती है। इस प्रणाली में स्थिति के आधार पर प्रत्येक ग्रह को 6 से 20 वर्ष तक की एक विशिष्ट संख्या दी जाती है।

प्रत्येक ग्रहों की अवधि के दौरान, विचाराधीन/संबंधित ग्रह का व्यक्ति के जीवन पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। यह प्रभाव सकारात्मक या नकारात्मक हो सकता है, जो व्यक्ति के जन्मकुण्डली और उस समय के विशिष्ट ग्रहों की स्थिति पर निर्भर करता है।

विंशोत्तरी दशा को वैदिक ज्योतिष में एक महत्वपूर्ण उपकरण माना जाता है, क्योंकि यह किसी व्यक्ति के जीवन में प्रमुख घटनाओं और परिवर्तनों की भविष्यवाणी करने के लिए एक विस्तृत और सटीक प्रणाली प्रदान करता है। ज्योतिषियों द्वारा करियर, रिश्ते, स्वास्थ्य, और किसी व्यक्ति के जीवन के अन्य पहलूओं के बारे में भविष्यवाणी करने के लिए इसका व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है और यह भविष्य में मार्गदर्शन या अंतर्दृष्टि की तलाश करने वालों के लिए एक मूल्यवान उपकरण हो सकता है।

बृहस्पति दशा

(10:08:1941 – 19:09:1950)

बृहस्पति अन्तर		
बृहस्पति	-------	--
शनि	-------	--
बुध	-------	--
केतु	-------	--
शुक्र	-------	--
सूर्य	-------	--
चन्द्रमा	-------	--
मंगल	-------	--
राहु	-------	--

शनि अन्तर		
शनि	-------	--
बुध	-------	--
केतु	-------	--
शुक्र	-------	--
सूर्य	-------	--
चन्द्रमा	-------	--
मंगल	-------	--
राहु	-------	--
बृहस्पति	-------	--

बुध अन्तर		
(10:08:1941 To 26:08:1941)		
बुध	-------	--
केतु	-------	--
शुक्र	-------	--
सूर्य	-------	--
चन्द्रमा	-------	--
मंगल	-------	--
राहु	-------	--
बृहस्पति	-------	--
शनि	26-08-1941	00.00

केतु अन्तर		
(26:08:1941 To 02:08:1942)		
केतु	15-09-1941	00.04
शुक्र	11-11-1941	00.10
सूर्य	28-11-1941	00.25
चन्द्रमा	26-12-1941	00.30
मंगल	15-01-1942	00.38
राहु	07-03-1942	00.43
बृहस्पति	21-04-1942	00.57
शनि	14-06-1942	00.70
बुध	02-08-1942	00.85

शुक्र अन्तर		
(02:08:1942 To 02:04:1945)		
शुक्र	11-01-1943	00.98
सूर्य	28-02-1943	01.42
चन्द्रमा	21-05-1943	01.56
मंगल	16-07-1943	01.78
राहु	09-12-1943	01.93
बृहस्पति	17-04-1944	02.33
शनि	19-09-1944	02.69
बुध	04-02-1945	03.11
केतु	02-04-1945	03.49

सूर्य अन्तर		
(02:04:1945 To 19:01:1946)		
सूर्य	16-04-1945	03.64
चन्द्रमा	11-05-1945	03.68
मंगल	28-05-1945	03.75
राहु	11-07-1945	03.80
बृहस्पति	19-08-1945	03.92
शनि	04-10-1945	04.02
बुध	14-11-1945	04.15
केतु	01-12-1945	04.26
शुक्र	19-01-1946	04.31

चन्द्रमा अन्तर		
(19:01:1946 To 21:05:1947)		
चन्द्रमा	28-02-1946	04.44
मंगल	29-03-1946	04.56
राहु	10-06-1946	04.63
बृहस्पति	14-08-1946	04.83
शनि	30-10-1946	05.01
बुध	07-01-1947	05.22
केतु	04-02-1947	05.41
शुक्र	26-04-1947	05.49
सूर्य	21-05-1947	05.71

मंगल अन्तर		
(21:05:1947 To 26:04:1948)		
मंगल	09-06-1947	05.78
राहु	31-07-1947	05.83
बृहस्पति	14-09-1947	05.97
शनि	07-11-1947	06.10
बुध	25-12-1947	06.24
केतु	14-01-1948	06.38
शुक्र	11-03-1948	06.43
सूर्य	28-03-1948	06.59
चन्द्रमा	26-04-1948	06.63

राहु अन्तर		
(26:04:1948 To 19:09:1950)		
राहु	04-09-1948	06.71
बृहस्पति	30-12-1948	07.07
शनि	18-05-1949	07.39
बुध	19-09-1949	07.77
केतु	09-11-1949	08.11
शुक्र	04-04-1950	08.25
सूर्य	18-05-1950	08.65
चन्द्रमा	30-07-1950	08.77
मंगल	19-09-1950	08.97

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

शनि दशा

(19:09:1950 – 19:09:1969)

शनि अन्तर		
(19:09:1950 To 22:09:1953)		
शनि	12-03-1951	09.11
बुध	15-08-1951	09.59
केतु	18-10-1951	10.01
शुक्र	18-04-1952	10.19
सूर्य	12-06-1952	10.69
चन्द्रमा	12-09-1952	10.84
मंगल	15-11-1952	11.09
राहु	29-04-1953	11.27
बृहस्पति	22-09-1953	11.72

बुध अन्तर		
(22:09:1953 To 01:06:1956)		
बुध	08-02-1954	12.12
केतु	07-04-1954	12.50
शुक्र	17-09-1954	12.66
सूर्य	06-11-1954	13.11
चन्द्रमा	26-01-1955	13.24
मंगल	25-03-1955	13.47
राहु	19-08-1955	13.62
बृहस्पति	28-12-1955	14.03
शनि	01-06-1956	14.39

केतु अन्तर		
(01:06:1956 To 11:07:1957)		
केतु	25-06-1956	14.81
शुक्र	31-08-1956	14.88
सूर्य	21-09-1956	15.06
चन्द्रमा	24-10-1956	15.12
मंगल	17-11-1956	15.21
राहु	17-01-1957	15.27
बृहस्पति	12-03-1957	15.44
शनि	15-05-1957	15.59
बुध	11-07-1957	15.76

शुक्र अन्तर		
(11:07:1957 To 10:09:1960)		
शुक्र	20-01-1958	15.92
सूर्य	19-03-1958	16.45
चन्द्रमा	23-06-1958	16.61
मंगल	29-08-1958	16.87
राहु	19-02-1959	17.05
बृहस्पति	23-07-1959	17.53
शनि	22-01-1960	17.95
बुध	04-07-1960	18.45
केतु	10-09-1960	18.90

सूर्य अन्तर		
(10:09:1960 To 23:08:1961)		
सूर्य	27-09-1960	19.09
चन्द्रमा	26-10-1960	19.13
मंगल	15-11-1960	19.21
राहु	07-01-1961	19.27
बृहस्पति	22-02-1961	19.41
शनि	18-04-1961	19.54
बुध	06-06-1961	19.69
केतु	26-06-1961	19.82
शुक्र	23-08-1961	19.88

चन्द्रमा अन्तर		
(23:08:1961 To 24:03:1963)		
चन्द्रमा	10-10-1961	20.04
मंगल	13-11-1961	20.17
राहु	07-02-1962	20.26
बृहस्पति	25-04-1962	20.50
शनि	26-07-1962	20.71
बुध	16-10-1962	20.96
केतु	19-11-1962	21.18
शुक्र	23-02-1963	21.28
सूर्य	24-03-1963	21.54

मंगल अन्तर		
(24:03:1963 To 02:05:1964)		
मंगल	16-04-1963	21.62
राहु	16-06-1963	21.68
बृहस्पति	09-08-1963	21.85
शनि	12-10-1963	22.00
बुध	08-12-1963	22.17
केतु	01-01-1964	22.33
शुक्र	09-03-1964	22.40
सूर्य	29-03-1964	22.58
चन्द्रमा	02-05-1964	22.64

राहु अन्तर		
(02:05:1964 To 09:03:1967)		
राहु	05-10-1964	22.73
बृहस्पति	21-02-1965	23.16
शनि	05-08-1965	23.54
बुध	30-12-1965	23.99
केतु	01-03-1966	24.39
शुक्र	21-08-1966	24.56
सूर्य	12-10-1966	25.03
चन्द्रमा	07-01-1967	25.17
मंगल	09-03-1967	25.41

बृहस्पति अन्तर		
(09:03:1967 To 19:09:1969)		
बृहस्पति	10-07-1967	25.58
शनि	03-12-1967	25.92
बुध	13-04-1968	26.32
केतु	06-06-1968	26.68
शुक्र	07-11-1968	26.82
सूर्य	23-12-1968	27.25
चन्द्रमा	11-03-1969	27.37
मंगल	04-05-1969	27.58
राहु	19-09-1969	27.73

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

बुध दशा

(19:09:1969 – 19:09:1986)

बुध अन्तर		
(19:09:1969 To 15:02:1972)		
बुध	22-01-1970	28.11
केतु	14-03-1970	28.45
शुक्र	08-08-1970	28.59
सूर्य	20-09-1970	28.99
चन्द्रमा	03-12-1970	29.11
मंगल	23-01-1971	29.32
राहु	04-06-1971	29.46
बृहस्पति	29-09-1971	29.82
शनि	15-02-1972	30.14

केतु अन्तर		
(15:02:1972 To 12:02:1973)		
केतु	08-03-1972	30.52
शुक्र	07-05-1972	30.58
सूर्य	25-05-1972	30.74
चन्द्रमा	24-06-1972	30.79
मंगल	16-07-1972	30.87
राहु	08-09-1972	30.93
बृहस्पति	26-10-1972	31.08
शनि	23-12-1972	31.21
बुध	12-02-1973	31.37

शुक्र अन्तर		
(12:02:1973 To 13:12:1975)		
शुक्र	04-08-1973	31.51
सूर्य	24-09-1973	31.98
चन्द्रमा	19-12-1973	32.13
मंगल	18-02-1974	32.36
राहु	23-07-1974	32.53
बृहस्पति	08-12-1974	32.95
शनि	21-05-1975	33.33
बुध	14-10-1975	33.78
केतु	13-12-1975	34.18

सूर्य अन्तर		
(13:12:1975 To 19:10:1976)		
सूर्य	29-12-1975	34.34
चन्द्रमा	24-01-1976	34.39
मंगल	11-02-1976	34.46
राहु	29-03-1976	34.51
बृहस्पति	09-05-1976	34.64
शनि	27-06-1976	34.75
बुध	10-08-1976	34.88
केतु	29-08-1976	35.00
शुक्र	19-10-1976	35.05

चन्द्रमा अन्तर		
(19:10:1976 To 21:03:1978)		
चन्द्रमा	02-12-1976	35.19
मंगल	01-01-1977	35.31
राहु	19-03-1977	35.40
बृहस्पति	27-05-1977	35.61
शनि	17-08-1977	35.80
बुध	30-10-1977	36.02
केतु	29-11-1977	36.22
शुक्र	23-02-1978	36.30
सूर्य	21-03-1978	36.54

मंगल अन्तर		
(21:03:1978 To 18:03:1979)		
मंगल	11-04-1978	36.61
राहु	04-06-1978	36.67
बृहस्पति	22-07-1978	36.82
शनि	18-09-1978	36.95
बुध	08-11-1978	37.11
केतु	29-11-1978	37.25
शुक्र	28-01-1979	37.31
सूर्य	15-02-1979	37.47
चन्द्रमा	18-03-1979	37.52

राहु अन्तर		
(18:03:1979 To 04:10:1981)		
राहु	04-08-1979	37.60
बृहस्पति	06-12-1979	37.99
शनि	02-05-1980	38.33
बुध	11-09-1980	38.73
केतु	05-11-1980	39.09
शुक्र	09-04-1981	39.24
सूर्य	26-05-1981	39.66
चन्द्रमा	11-08-1981	39.79
मंगल	04-10-1981	40.00

बृहस्पति अन्तर		
(04:10:1981 To 10:01:1984)		
बृहस्पति	23-01-1982	40.15
शनि	03-06-1982	40.46
बुध	28-09-1982	40.81
केतु	15-11-1982	41.14
शुक्र	02-04-1983	41.27
सूर्य	13-05-1983	41.65
चन्द्रमा	21-07-1983	41.76
मंगल	08-09-1983	41.95
राहु	10-01-1984	42.08

शनि अन्तर		
(10:01:1984 To 19:09:1986)		
शनि	14-06-1984	42.42
बुध	31-10-1984	42.85
केतु	28-12-1984	43.23
शुक्र	10-06-1985	43.38
सूर्य	29-07-1985	43.83
चन्द्रमा	19-10-1985	43.97
मंगल	15-12-1985	44.19
राहु	11-05-1986	44.35
बृहस्पति	19-09-1986	44.75

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

केतु दशा

(19:09:1986 – 19:09:1993)

केतु अन्तर		
(19:09:1986 To 15:02:1987)		
केतु	28-09-1986	45.11
शुक्र	23-10-1986	45.14
सूर्य	30-10-1986	45.20
चन्द्रमा	12-11-1986	45.22
मंगल	20-11-1986	45.26
राहु	13-12-1986	45.28
बृहस्पति	02-01-1987	45.34
शनि	25-01-1987	45.40
बुध	15-02-1987	45.46

शुक्र अन्तर		
(15:02:1987 To 16:04:1988)		
शुक्र	27-04-1987	45.52
सूर्य	19-05-1987	45.71
चन्द्रमा	23-06-1987	45.77
मंगल	18-07-1987	45.87
राहु	20-09-1987	45.94
बृहस्पति	15-11-1987	46.11
शनि	22-01-1988	46.27
बुध	22-03-1988	46.45
केतु	16-04-1988	46.62

सूर्य अन्तर		
(16:04:1988 To 22:08:1988)		
सूर्य	23-04-1988	46.69
चन्द्रमा	03-05-1988	46.70
मंगल	11-05-1988	46.73
राहु	30-05-1988	46.75
बृहस्पति	16-06-1988	46.81
शनि	07-07-1988	46.85
बुध	25-07-1988	46.91
केतु	01-08-1988	46.96
शुक्र	22-08-1988	46.98

चन्द्रमा अन्तर		
(22:08:1988 To 24:03:1989)		
चन्द्रमा	09-09-1988	47.04
मंगल	22-09-1988	47.08
राहु	24-10-1988	47.12
बृहस्पति	21-11-1988	47.21
शनि	25-12-1988	47.28
बुध	24-01-1989	47.38
केतु	06-02-1989	47.46
शुक्र	13-03-1989	47.49
सूर्य	24-03-1989	47.59

मंगल अन्तर		
(24:03:1989 To 20:08:1989)		
मंगल	01-04-1989	47.62
राहु	24-04-1989	47.64
बृहस्पति	14-05-1989	47.70
शनि	06-06-1989	47.76
बुध	27-06-1989	47.82
केतु	06-07-1989	47.88
शुक्र	31-07-1989	47.91
सूर्य	07-08-1989	47.97
चन्द्रमा	20-08-1989	47.99

राहु अन्तर		
(20:08:1989 To 07:09:1990)		
राहु	16-10-1989	48.03
बृहस्पति	06-12-1989	48.19
शनि	05-02-1990	48.33
बुध	31-03-1990	48.49
केतु	23-04-1990	48.64
शुक्र	26-06-1990	48.70
सूर्य	15-07-1990	48.88
चन्द्रमा	16-08-1990	48.93
मंगल	07-09-1990	49.02

बृहस्पति अन्तर		
(07:09:1990 To 14:08:1991)		
बृहस्पति	22-10-1990	49.08
शनि	15-12-1990	49.20
बुध	02-02-1991	49.35
केतु	22-02-1991	49.48
शुक्र	19-04-1991	49.54
सूर्य	06-05-1991	49.69
चन्द्रमा	04-06-1991	49.74
मंगल	24-06-1991	49.82
राहु	14-08-1991	49.87

शनि अन्तर		
(14:08:1991 To 22:09:1992)		
शनि	17-10-1991	50.01
बुध	13-12-1991	50.19
केतु	06-01-1992	50.34
शुक्र	13-03-1992	50.41
सूर्य	03-04-1992	50.59
चन्द्रमा	06-05-1992	50.65
मंगल	30-05-1992	50.74
राहु	30-07-1992	50.81
बृहस्पति	22-09-1992	50.97

बुध अन्तर		
(22:09:1992 To 19:09:1993)		
बुध	12-11-1992	51.12
केतु	04-12-1992	51.26
शुक्र	02-02-1993	51.32
सूर्य	20-02-1993	51.48
चन्द्रमा	22-03-1993	51.53
मंगल	12-04-1993	51.62
राहु	06-06-1993	51.67
बृहस्पति	24-07-1993	51.82
शनि	19-09-1993	51.95

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

शुक्र दशा

(19:09:1993 – 19:09:2013)

शुक्र अन्तर		
(19:09:1993 To 19:01:1997)		
शुक्र	10-04-1994	52.11
सूर्य	10-06-1994	52.67
चन्द्रमा	19-09-1994	52.83
मंगल	29-11-1994	53.11
राहु	31-05-1995	53.31
बृहस्पति	09-11-1995	53.81
शनि	20-05-1996	54.25
बुध	09-11-1996	54.78
केतु	19-01-1997	55.25

सूर्य अन्तर		
(19:01:1997 To 19:01:1998)		
सूर्य	06-02-1997	55.44
चन्द्रमा	09-03-1997	55.49
मंगल	30-03-1997	55.58
राहु	24-05-1997	55.64
बृहस्पति	11-07-1997	55.79
शनि	07-09-1997	55.92
बुध	29-10-1997	56.08
केतु	19-11-1997	56.22
शुक्र	19-01-1998	56.28

चन्द्रमा अन्तर		
(19:01:1998 To 19:09:1999)		
चन्द्रमा	11-03-1998	56.44
मंगल	15-04-1998	56.58
राहु	15-07-1998	56.68
बृहस्पति	04-10-1998	56.93
शनि	09-01-1999	57.15
बुध	05-04-1999	57.42
केतु	10-05-1999	57.65
शुक्र	20-08-1999	57.75
सूर्य	19-09-1999	58.03

मंगल अन्तर		
(19:09:1999 To 19:11:2000)		
मंगल	14-10-1999	58.11
राहु	17-12-1999	58.18
बृहस्पति	12-02-2000	58.35
शनि	19-04-2000	58.51
बुध	19-06-2000	58.69
केतु	14-07-2000	58.86
शुक्र	23-09-2000	58.93
सूर्य	14-10-2000	59.12
चन्द्रमा	19-11-2000	59.18

राहु अन्तर		
(19:11:2000 To 19:11:2003)		
राहु	02-05-2001	59.28
बृहस्पति	25-09-2001	59.73
शनि	18-03-2002	60.13
बुध	20-08-2002	60.60
केतु	23-10-2002	61.03
शुक्र	23-04-2003	61.20
सूर्य	17-06-2003	61.70
चन्द्रमा	16-09-2003	61.85
मंगल	19-11-2003	62.10

बृहस्पति अन्तर		
(19:11:2003 To 20:07:2006)		
बृहस्पति	28-03-2004	62.28
शनि	30-08-2004	62.63
बुध	15-01-2005	63.06
केतु	13-03-2005	63.43
शुक्र	22-08-2005	63.59
सूर्य	09-10-2005	64.03
चन्द्रमा	30-12-2005	64.17
मंगल	24-02-2006	64.39
राहु	20-07-2006	64.54

शनि अन्तर		
(20:07:2006 To 19:09:2009)		
शनि	19-01-2007	64.94
बुध	02-07-2007	65.45
केतु	08-09-2007	65.89
शुक्र	18-03-2008	66.08
सूर्य	15-05-2008	66.61
चन्द्रमा	20-08-2008	66.77
मंगल	27-10-2008	67.03
राहु	18-04-2009	67.21
बृहस्पति	19-09-2009	67.69

बुध अन्तर		
(19:09:2009 To 20:07:2012)		
बुध	13-02-2010	68.11
केतु	14-04-2010	68.51
शुक्र	03-10-2010	68.68
सूर्य	24-11-2010	69.15
चन्द्रमा	18-02-2011	69.29
मंगल	20-04-2011	69.53
राहु	22-09-2011	69.69
बृहस्पति	07-02-2012	70.12
शनि	20-07-2012	70.50

केतु अन्तर		
(20:07:2012 To 19:09:2013)		
केतु	14-08-2012	70.94
शुक्र	24-10-2012	71.01
सूर्य	14-11-2012	71.21
चन्द्रमा	20-12-2012	71.27
मंगल	14-01-2013	71.36
राहु	19-03-2013	71.43
बृहस्पति	14-05-2013	71.61
शनि	21-07-2013	71.76
बुध	19-09-2013	71.95

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

सूर्य दशा

(19:09:2013 – 19:09:2019)

सूर्य अन्तर		
(19:09:2013 To 07:01:2014)		
सूर्य	25-09-2013	72.11
चन्द्रमा	04-10-2013	72.13
मंगल	10-10-2013	72.15
राहु	27-10-2013	72.17
बृहस्पति	10-11-2013	72.21
शनि	28-11-2013	72.25
बुध	13-12-2013	72.30
केतु	19-12-2013	72.34
शुक्र	07-01-2014	72.36

चन्द्रमा अन्तर		
(07:01:2014 To 08:07:2014)		
चन्द्रमा	22-01-2014	72.41
मंगल	02-02-2014	72.45
राहु	01-03-2014	72.48
बृहस्पति	25-03-2014	72.56
शनि	23-04-2014	72.62
बुध	19-05-2014	72.70
केतु	30-05-2014	72.77
शुक्र	29-06-2014	72.80
सूर्य	08-07-2014	72.89

मंगल अन्तर		
(08:07:2014 To 13:11:2014)		
मंगल	16-07-2014	72.91
राहु	04-08-2014	72.93
बृहस्पति	21-08-2014	72.98
शनि	10-09-2014	73.03
बुध	28-09-2014	73.09
केतु	06-10-2014	73.14
शुक्र	27-10-2014	73.16
सूर्य	02-11-2014	73.21
चन्द्रमा	13-11-2014	73.23

राहु अन्तर		
(13:11:2014 To 07:10:2015)		
राहु	01-01-2015	73.26
बृहस्पति	14-02-2015	73.40
शनि	07-04-2015	73.52
बुध	24-05-2015	73.66
केतु	12-06-2015	73.79
शुक्र	05-08-2015	73.84
सूर्य	22-08-2015	73.99
चन्द्रमा	18-09-2015	74.03
मंगल	07-10-2015	74.11

बृहस्पति अन्तर		
(07:10:2015 To 26:07:2016)		
बृहस्पति	15-11-2015	74.16
शनि	01-01-2016	74.27
बुध	11-02-2016	74.39
केतु	28-02-2016	74.51
शुक्र	17-04-2016	74.55
सूर्य	02-05-2016	74.69
चन्द्रमा	26-05-2016	74.73
मंगल	12-06-2016	74.79
राहु	26-07-2016	74.84

शनि अन्तर		
(26:07:2016 To 08:07:2017)		
शनि	19-09-2016	74.96
बुध	07-11-2016	75.11
केतु	28-11-2016	75.25
शुक्र	24-01-2017	75.30
सूर्य	11-02-2017	75.46
चन्द्रमा	12-03-2017	75.51
मंगल	01-04-2017	75.59
राहु	23-05-2017	75.64
बृहस्पति	08-07-2017	75.78

बुध अन्तर		
(08:07:2017 To 14:05:2018)		
बुध	21-08-2017	75.91
केतु	08-09-2017	76.03
शुक्र	30-10-2017	76.08
सूर्य	14-11-2017	76.22
चन्द्रमा	10-12-2017	76.27
मंगल	28-12-2017	76.34
राहु	13-02-2018	76.39
बृहस्पति	26-03-2018	76.51
शनि	14-05-2018	76.63

केतु अन्तर		
(14:05:2018 To 19:09:2018)		
केतु	22-05-2018	76.76
शुक्र	12-06-2018	76.78
सूर्य	19-06-2018	76.84
चन्द्रमा	29-06-2018	76.86
मंगल	07-07-2018	76.89
राहु	26-07-2018	76.91
बृहस्पति	12-08-2018	76.96
शनि	01-09-2018	77.01
बुध	19-09-2018	77.06

शुक्र अन्तर		
(19:09:2018 To 19:09:2019)		
शुक्र	19-11-2018	77.11
सूर्य	07-12-2018	77.28
चन्द्रमा	07-01-2019	77.33
मंगल	28-01-2019	77.41
राहु	24-03-2019	77.47
बृहस्पति	11-05-2019	77.62
शनि	08-07-2019	77.75
बुध	29-08-2019	77.91
केतु	19-09-2019	78.05

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

चन्द्रमा दशा

(19:09:2019 – 19:09:2029)

चन्द्रमा अन्तर		
(19:09:2019 To 20:07:2020)		
चन्द्रमा	15-10-2019	78.11
मंगल	01-11-2019	78.18
राहु	17-12-2019	78.23
बृहस्पति	27-01-2020	78.35
शनि	15-03-2020	78.47
बुध	27-04-2020	78.60
केतु	15-05-2020	78.72
शुक्र	05-07-2020	78.76
सूर्य	20-07-2020	78.90

मंगल अन्तर		
(20:07:2020 To 18:02:2021)		
मंगल	01-08-2020	78.94
राहु	02-09-2020	78.98
बृहस्पति	01-10-2020	79.07
शनि	04-11-2020	79.14
बुध	04-12-2020	79.24
केतु	16-12-2020	79.32
शुक्र	21-01-2021	79.35
सूर्य	01-02-2021	79.45
चन्द्रमा	18-02-2021	79.48

राहु अन्तर		
(18:02:2021 To 20:08:2022)		
राहु	11-05-2021	79.53
बृहस्पति	23-07-2021	79.75
शनि	18-10-2021	79.95
बुध	04-01-2022	80.19
केतु	05-02-2022	80.40
शुक्र	07-05-2022	80.49
सूर्य	03-06-2022	80.74
चन्द्रमा	19-07-2022	80.82
मंगल	20-08-2022	80.94

बृहस्पति अन्तर		
(20:08:2022 To 19:12:2023)		
बृहस्पति	24-10-2022	81.03
शनि	09-01-2023	81.21
बुध	19-03-2023	81.42
केतु	16-04-2023	81.61
शुक्र	06-07-2023	81.68
सूर्य	31-07-2023	81.91
चन्द्रमा	09-09-2023	81.97
मंगल	07-10-2023	82.08
राहु	19-12-2023	82.16

शनि अन्तर		
(19:12:2023 To 20:07:2025)		
शनि	20-03-2024	82.36
बुध	10-06-2024	82.61
केतु	14-07-2024	82.84
शुक्र	19-10-2024	82.93
सूर्य	17-11-2024	83.19
चन्द्रमा	04-01-2025	83.27
मंगल	07-02-2025	83.40
राहु	04-05-2025	83.50
बृहस्पति	20-07-2025	83.73

बुध अन्तर		
(20:07:2025 To 19:12:2026)		
बुध	02-10-2025	83.94
केतु	01-11-2025	84.15
शुक्र	26-01-2026	84.23
सूर्य	21-02-2026	84.46
चन्द्रमा	05-04-2026	84.53
मंगल	05-05-2026	84.65
राहु	22-07-2026	84.74
बृहस्पति	29-09-2026	84.95
शनि	19-12-2026	85.14

केतु अन्तर		
(19:12:2026 To 20:07:2027)		
केतु	01-01-2027	85.36
शुक्र	05-02-2027	85.40
सूर्य	16-02-2027	85.49
चन्द्रमा	06-03-2027	85.52
मंगल	18-03-2027	85.57
राहु	19-04-2027	85.60
बृहस्पति	17-05-2027	85.69
शनि	20-06-2027	85.77
बुध	20-07-2027	85.86

शुक्र अन्तर		
(20:07:2027 To 21:03:2029)		
शुक्र	30-10-2027	85.94
सूर्य	29-11-2027	86.22
चन्द्रमा	19-01-2028	86.31
मंगल	24-02-2028	86.44
राहु	25-05-2028	86.54
बृहस्पति	14-08-2028	86.79
शनि	19-11-2028	87.01
बुध	13-02-2029	87.28
केतु	21-03-2029	87.51

सूर्य अन्तर		
(21:03:2029 To 19:09:2029)		
सूर्य	30-03-2029	87.61
चन्द्रमा	14-04-2029	87.64
मंगल	25-04-2029	87.68
राहु	22-05-2029	87.71
बृहस्पति	15-06-2029	87.78
शनि	14-07-2029	87.85
बुध	09-08-2029	87.93
केतु	20-08-2029	88.00
शुक्र	19-09-2029	88.03

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

मंगल दशा

(19:09:2029 – 19:09:2036)

मंगल अन्तर		
(19:09:2029 To 15:02:2030)		
मंगल	28-09-2029	88.11
राहु	20-10-2029	88.14
बृहस्पति	09-11-2029	88.20
शनि	03-12-2029	88.25
बुध	24-12-2029	88.32
केतु	02-01-2030	88.37
शुक्र	26-01-2030	88.40
सूर्य	03-02-2030	88.47
चन्द्रमा	15-02-2030	88.49

राहु अन्तर		
(15:02:2030 To 05:03:2031)		
राहु	14-04-2030	88.52
बृहस्पति	04-06-2030	88.68
शनि	04-08-2030	88.82
बुध	27-09-2030	88.98
केतु	19-10-2030	89.13
शुक्र	22-12-2030	89.19
सूर्य	10-01-2031	89.37
चन्द्रमा	11-02-2031	89.42
मंगल	05-03-2031	89.51

बृहस्पति अन्तर		
(05:03:2031 To 09:02:2032)		
बृहस्पति	20-04-2031	89.57
शनि	13-06-2031	89.69
बुध	31-07-2031	89.84
केतु	20-08-2031	89.97
शुक्र	16-10-2031	90.03
सूर्य	02-11-2031	90.18
चन्द्रमा	30-11-2031	90.23
मंगल	20-12-2031	90.31
राहु	09-02-2032	90.36

शनि अन्तर		
(09:02:2032 To 21:03:2033)		
शनि	14-04-2032	90.50
बुध	10-06-2032	90.68
केतु	04-07-2032	90.84
शुक्र	09-09-2032	90.90
सूर्य	30-09-2032	91.08
चन्द्रमा	02-11-2032	91.14
मंगल	26-11-2032	91.23
राहु	26-01-2033	91.30
बृहस्पति	21-03-2033	91.46

बुध अन्तर		
(21:03:2033 To 18:03:2034)		
बुध	11-05-2033	91.61
केतु	01-06-2033	91.75
शुक्र	31-07-2033	91.81
सूर्य	19-08-2033	91.97
चन्द्रमा	18-09-2033	92.02
मंगल	09-10-2033	92.11
राहु	02-12-2033	92.16
बृहस्पति	19-01-2034	92.31
शनि	18-03-2034	92.45

केतु अन्तर		
(18:03:2034 To 14:08:2034)		
केतु	26-03-2034	92.60
शुक्र	20-04-2034	92.63
सूर्य	28-04-2034	92.69
चन्द्रमा	10-05-2034	92.72
मंगल	19-05-2034	92.75
राहु	10-06-2034	92.77
बृहस्पति	30-06-2034	92.83
शनि	24-07-2034	92.89
बुध	14-08-2034	92.95

शुक्र अन्तर		
(14:08:2034 To 14:10:2035)		
शुक्र	24-10-2034	93.01
सूर्य	14-11-2034	93.21
चन्द्रमा	19-12-2034	93.26
मंगल	13-01-2035	93.36
राहु	18-03-2035	93.43
बृहस्पति	14-05-2035	93.60
शनि	20-07-2035	93.76
बुध	19-09-2035	93.94
केतु	14-10-2035	94.11

सूर्य अन्तर		
(14:10:2035 To 18:02:2036)		
सूर्य	20-10-2035	94.18
चन्द्रमा	31-10-2035	94.20
मंगल	07-11-2035	94.22
राहु	26-11-2035	94.25
बृहस्पति	13-12-2035	94.30
शनि	02-01-2036	94.34
बुध	21-01-2036	94.40
केतु	28-01-2036	94.45
शुक्र	18-02-2036	94.47

चन्द्रमा अन्तर		
(18:02:2036 To 19:09:2036)		
चन्द्रमा	07-03-2036	94.53
मंगल	20-03-2036	94.58
राहु	21-04-2036	94.61
बृहस्पति	19-05-2036	94.70
शनि	22-06-2036	94.78
बुध	22-07-2036	94.87
केतु	04-08-2036	94.95
शुक्र	08-09-2036	94.98
सूर्य	19-09-2036	95.08

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

राहु दशा

(19:09:2036 – 19:09:2054)

राहु अन्तर		
(19:09:2036 To 02:06:2039)		
राहु	14-02-2037	95.11
बृहस्पति	25-06-2037	95.52
शनि	28-11-2037	95.88
बुध	17-04-2038	96.30
केतु	14-06-2038	96.69
शुक्र	25-11-2038	96.84
सूर्य	13-01-2039	97.29
चन्द्रमा	05-04-2039	97.43
मंगल	02-06-2039	97.65

बृहस्पति अन्तर		
(02:06:2039 To 26:10:2041)		
बृहस्पति	27-09-2039	97.81
शनि	12-02-2040	98.13
बुध	16-06-2040	98.51
केतु	06-08-2040	98.85
शुक्र	30-12-2040	98.99
सूर्य	12-02-2041	99.39
चन्द्रमा	26-04-2041	99.51
मंगल	16-06-2041	99.71
राहु	26-10-2041	99.85

शनि अन्तर		
(26:10:2041 To 01:09:2044)		
शनि	08-04-2042	100.21
बुध	03-09-2042	100.66
केतु	02-11-2042	101.07
शुक्र	25-04-2043	101.23
सूर्य	16-06-2043	101.71
चन्द्रमा	11-09-2043	101.85
मंगल	10-11-2043	102.09
राहु	15-04-2044	102.25
बृहस्पति	01-09-2044	102.68

बुध अन्तर		
(01:09:2044 To 21:03:2047)		
बुध	11-01-2045	103.06
केतु	06-03-2045	103.42
शुक्र	08-08-2045	103.57
सूर्य	24-09-2045	104.00
चन्द्रमा	10-12-2045	104.12
मंगल	03-02-2046	104.34
राहु	22-06-2046	104.49
बृहस्पति	24-10-2046	104.87
शनि	21-03-2047	105.21

केतु अन्तर		
(21:03:2047 To 07:04:2048)		
केतु	12-04-2047	105.61
शुक्र	15-06-2047	105.67
सूर्य	04-07-2047	105.85
चन्द्रमा	05-08-2047	105.90
मंगल	27-08-2047	105.99
राहु	24-10-2047	106.05
बृहस्पति	14-12-2047	106.21
शनि	13-02-2048	106.35
बुध	07-04-2048	106.51

शुक्र अन्तर		
(07:04:2048 To 08:04:2051)		
शुक्र	07-10-2048	106.66
सूर्य	01-12-2048	107.16
चन्द्रमा	02-03-2049	107.31
मंगल	05-05-2049	107.56
राहु	17-10-2049	107.74
बृहस्पति	12-03-2050	108.19
शनि	01-09-2050	108.59
बुध	03-02-2051	109.06
केतु	08-04-2051	109.49

सूर्य अन्तर		
(08:04:2051 To 02:03:2052)		
सूर्य	24-04-2051	109.66
चन्द्रमा	22-05-2051	109.71
मंगल	10-06-2051	109.78
राहु	29-07-2051	109.83
बृहस्पति	11-09-2051	109.97
शनि	02-11-2051	110.09
बुध	19-12-2051	110.23
केतु	07-01-2052	110.36
शुक्र	02-03-2052	110.41

चन्द्रमा अन्तर		
(02:03:2052 To 01:09:2053)		
चन्द्रमा	16-04-2052	110.56
मंगल	18-05-2052	110.69
राहु	09-08-2052	110.77
बृहस्पति	21-10-2052	111.00
शनि	16-01-2053	111.20
बुध	03-04-2053	111.44
केतु	05-05-2053	111.65
शुक्र	05-08-2053	111.74
सूर्य	01-09-2053	111.99

मंगल अन्तर		
(01:09:2053 To 19:09:2054)		
मंगल	23-09-2053	112.06
राहु	20-11-2053	112.12
बृहस्पति	10-01-2054	112.28
शनि	12-03-2054	112.42
बुध	05-05-2054	112.59
केतु	27-05-2054	112.74
शुक्र	30-07-2054	112.80
सूर्य	18-08-2054	112.97
चन्द्रमा	19-09-2054	113.02

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

कुण्डली में प्राप्त दोषों का विवेचन और उपाय

लाल किताब ज्योतिष में, जीवन की चुनौतियों से निपटने और सफलता पाने के लिए कुंडली में स्थित महत्वपूर्ण दोषों या विकारों की पहचान करना और उनका समाधान करना आवश्यक है। ये दोष, जिनमें पितृ ऋण, अंधा टेवा, आधा अंधा टेवा, मांगलिक दोष और काल सर्प दोष शामिल हैं, किसी के जीवन के विभिन्न पहलुओं, जैसे स्वास्थ्य, वित्त, रिश्ते और सामान्य भलाई पर गहरा प्रभाव डाल सकते हैं। इन दोषों के नकारात्मक प्रभाव को कम करने के लिए उनके उपचार की तलाश करना महत्वपूर्ण है। उपचार विशिष्ट अनुष्ठानों, प्रार्थना करने, दान करने, रत्न पहनने से लेकर जीवनशैली में बदलाव लाने तक हो सकते हैं। ये उपचारात्मक उपाय ग्रहों के प्रभाव को संतुलित करने, बाधाओं को दूर करने और अधिक शांतिपूर्ण और समृद्ध जीवन का मार्ग बनाने में मदद कर सकते हैं।

कुण्डली में लागू होने वाले पितृ ऋण

यदि पूर्वजों में से किसी ने कोई बुरा या पाप कर्म किया है, तो यह पितृ ऋण में बदल जाता है और इसे परिवार के किसी सदस्य द्वारा चुकाया जाना चाहिए। इसीलिए उन्हें कष्ट होता है। कभी-कभी, हम अपने बड़ों के पापों से अविश्वसनीय और आश्चर्यजनक तरीके से रहस्यमय तरीके से प्रभावित होते हैं। निहितार्थ यह है कि अपराध कोई और करता है, और जुर्माना कोई और व्यक्ति भरता है। पैतृक ऋण के मामले में अक्सर सज़ा किसी करीबी रिश्तेदार को भुगतनी पड़ती है। पितृ ऋण का विचार जन्म कुंडली से किया जाता है। एक बार ऋण की पहचान हो जाने पर उसका निवारण भी किसी रक्त संबंधी को ही करना पड़ता है। पैतृक ऋण का भुगतान किसी अन्य व्यक्ति द्वारा नहीं किया जा सकता है। रक्त संबंधियों में बहनें, बेटियाँ और उनके बच्चे जैसे पोते, भतीजे, भतीजी आदि शामिल हैं। लाल किताब के अनुसार मनुष्य नौ ग्रहों के आधार पर नौ प्रकार के ऋण लेता है। इनमें आत्म-ऋण, मातृ-ऋण, पारिवारिक ऋण, बहन/बेटी का ऋण, पितृ-ऋण, स्त्री-ऋण, निर्दयता-ऋण, जीवन भर का ऋण और दैवीय ऋण शामिल हैं।

पितृ ऋण

कुण्डली में बुध दूसरे, पाँचवें, नवें या बारहवें भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, यह कुण्डली में पितृ ऋण को दर्शाता है। आपको लाल किताब में बताये हुए उपायों का पालन करना चाहिए।

पितृ ऋण के कारण –

1– यदि कुल पुरोहित बदलने की आवश्यकता होती है।

2– यदि घर के आस-पास का कोई धार्मिक स्थल नष्ट कर दिया गया हो।

3– घर के आस-पास में कोई पीपल या बरगद का पेड़ नष्ट कर दिया गया हो।

पितृ ऋण के लक्षण –

लाल किताब के अनुसार, आपके बाल में जब सफेदी आने लगती है, तो घर की धन-संपत्ति अपने आप नष्ट होनी शुरू हो जाती है तथा सिर पर चोटी के स्थान से बाल गायब हो जाते हैं और गले में माला या कंठी पहनना शुरू कर सकते हैं। आपके बारे में गलत अफवाहें उड़नी शुरू हो जाती है। आपको बिना गलती के ही जेल जाना पड़ सकता है।

पितृ ऋण के उपाय –

1– आप अपने परिवार के सारे सदस्यों से बराबर-बराबर पैसा इकट्ठा करें और किसी धार्मिक स्थान में दान करें।

2– अपने घर के आस-पास के किसी धार्मिक स्थल पर जाकर वहां की साफ-सफाई करें।

3– घर के आस-पास कोई पीपल या बरगद का पेड़ हो तो उसकी सेवा तथा देख-भाल करें और उसमें पानी डालें।

स्त्री ऋण

कुण्डली में सुर्य दूसरे या सातवें भाव में स्थित है। लाल किताब के अनुसार, यह कुण्डली में स्त्री ऋण को दर्शाता है। आपको लाल किताब में बताये हुए उपायों का पालन करना चाहिए।

स्त्री ऋण के कारण –

1– आपके घर में किसी गर्भवती स्त्री के साथ गर्भावस्था के दौरान बुरा व्यवहार किया गया हो अथवा आपके पारिवारिक सदस्य आपस में हमेशा लड़ाई–झगड़ा करते रहे हों।

2– आपके घर में कोई भी व्यक्ति जानवरों पर दया ना करता हो, विशेषतः गाय पर या किसी खुशी के मौके पर दुखद घटना घट जाये।

स्त्री ऋण के लक्षण –

आपके परिवार में किसी खुशी के मौके पर किसी की मृत्यु हो जाती है, तो यह शुक्र खराब होने की सबसे बड़ी निशानी है।

स्त्री ऋण के उपाय –

1– आपको अपने परिवार के सारे सदस्यों से बारबर मात्रा में धन लेकर उसका हरा चारा खरीदकर कम से कम 100 गायों को खिलाना चाहिए।

2– आपको अपना पहनावा बढ़िया रखना चाहिए, फटे–पुराने कपड़े न पहनें।

अन्धे ग्रहों की कुण्डली

लाल किताब के अनुसार, यदि किसी कुण्डली के दसवें भाव में दो आपस में शत्रु ग्रह में बैठ जायें या कोई नीच ग्रह बैठा हो अथवा कोई ग्रह शत्रु ग्रह की पूर्ण दृष्टि में हो, तो ऐसी कुण्डली को अंधे ग्रहों की कुण्डली (टेवा) कहते हैं। कुण्डली में दसवां भाव जातक का कर्म स्थान है, इस घर का जातक की कमाई से संबद्ध है, इसलिए ऐसे भाव में दो या दो से अधिक परस्पर शत्रुता वाले ग्रह बैठ जायें (युति या दृष्टि से) या नीच का ग्रह हो तो, जातक के कर्मक्षेत्र में असंतुलन की स्तिथि पैदा हो जाती है। जातक की नौकरी या व्यापार में स्थिरता नहीं आ पाती है। दसवें भाव में बैठे अंधे हो चुके ग्रहों को ठीक करने के लिए दस अंधों को भोजन कराना चाहिए।

निष्कर्ष– आपकी कुण्डली के दसवें भाव में दो या दो से अधिक ग्रह स्थित हैं, जो आपस में शत्रु हैं (युति या दृष्टि से) या कोई नीच का ग्रह है। लाल किताब के अनुसार, आपकी कुण्डली अंधे ग्रहों की कुण्डली (टेवा) है।

कुण्डली में ग्रहों का प्रभाव और उपाय

हमारे सौर मंडल में खगोलीय पिंड, विशेष रूप से ग्रह, लाल किताब के अनुसार आपके जीवन को परिभाषित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जो हिंदू ज्योतिष और हस्तरेखा विज्ञान पर उर्दू भाषा की पांच पुस्तकों का एक क्रम है। ये ब्रह्मांडीय संस्थाएं आपके व्यक्तित्व, कार्यों, सफलताओं और चुनौतियों पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालती हैं, जो आपके जीवन पथ को गहराई से आकार देती हैं। लाल किताब इन ग्रहों के प्रभावों के बारे में अद्वितीय अंतर्दृष्टि प्रदान करती है और किसी भी प्रतिकूल प्रभाव को कम करने के लिए व्यावहारिक उपाय प्रदान करती है। लाल किताब में दिए गए नुस्खे पालन करने में सरल हैं और इसमें जटिल अनुष्ठान शामिल नहीं हैं, जिससे वे सभी के लिए सुलभ हो जाते हैं। इन दिशानिर्देशों का पालन करके, आप ब्रह्मांड के साथ सामंजस्य स्थापित करने, अपने जीवन में संतुलन हासिल करने और इस प्रक्रिया में अपनी क्षमता की अनुभूति करने का प्रयास कर सकते हैं।

कुण्डली में सूर्य देव का प्रभाव और उपाय

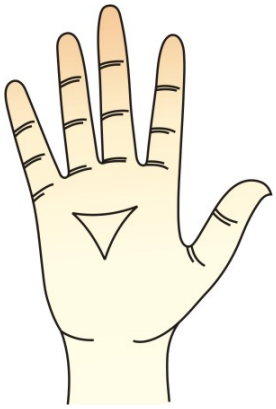

निम्न समयावधि में आपको सूर्य का अच्छा या बुरा फल प्राप्त होगा

(10/08/1962 से 08/08/1964 तक, 10/08/1997 से 09/08/1999 तक, 09/08/2032 से 09/08/2034 तक)

आपकी कुण्डली में सूर्य दूसरे भाव में स्थित है। आप परोपकारी होंगे और कल्याणकारी कार्य करेंगे। आप धार्मिक कार्यों में अग्रणी भूमिका निभायेंगे और मन्दिर तथा धर्मशाला बनवायेंगे। आप आत्मविश्वासी होंगे, जिससे आप अपने कार्यों को निश्चितंता के साथ पूर्ण करेंगे। आपकी बहादुरी आपकी उन्नति का मार्ग प्रशस्त करेगी और आप जीवन में प्रगति करेंगे। आपकी प्रगति अन्य लोगों के जीवन में उन्नति के द्वार खोलने में सहायक होगी। आप कोई बड़ा व्यवसाय करेंगे। आप अपनी प्रतिभा के बल पर धन संग्रह करेंगे। आप अपने परिवार और ससुराल वालों के साथ एक बहुत सुखद और खुशहाल जीवन व्यतीत करेंगे। आप अपने पिता, ससुर और संबंधियों के प्रिय होंगे, लेकिन परिवार की महिलाओं के बारे में ऐसा नहीं हो सकता है।

आपको सरकार के द्वारा लाभ प्राप्त होगा और सरकारी अधिकारियों से आपको सम्मान प्राप्त होगा। आपको कीमती वाहन का सुख प्राप्त होगा। आप सुखों से भरपूर जीवन व्यतीत करेंगे। यदि आप औरतों के झगड़ों से दूर रहें तो अधिक उन्नति करेंगे एवं उत्तम वाहन सुख प्राप्त होगा। आप धार्मिक क्रिया-कलापों में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेंगे। आप कोई मंदिर या धर्मशाला आदि का निर्माण करा सकते हैं। आप पुरानी परंपराओं को मानने वाले होंगे। आपका जन्म सुबह के समय होगा। आप धनी एवं प्रतिष्ठावान व्यक्ति होंगे। आपके शत्रु अधिक दिनों तक आपको परेशान नहीं कर सकते हैं। वे खुद बर्बाद हो जायेंगे। आपको किसी के सामने हाथ नहीं फैलाना चाहिए, अशुभ फल प्राप्त होगा। आपके पिता की तरक्की होगी। आपके ससुराल वालों पर भी भाग्य मेहरबान होगा। आप साहसी, पराक्रमी एवं दानवीर होंगे। परन्तु स्त्रियों के साथ किसी तरह का विवाद होने पर आपको हार का सामना करना पड़ सकता है।

आपको सूर्य के शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न परहेज करना चाहिए --

कोई भी वस्तु बिना धन दिये न लें। दान या उपहार न लें। दूसरों के धन पर बुरी नजर न रखें। सरकारी कर्मचारियों को नाराज न करें। उनसे दुश्मनी न करें। स्त्रियों के साथ जमीन-जायदाद के झगड़े से बचें। अपना चरित्र साफ-सुथरा रखें। लोगों की भलाई का काम करते रहें।

निम्न शारीरिक/पारिवारिक/आर्थिक अथवा सामाजिक लक्षणों के आधार पर भी सूर्य के अशुभ होने का अनुमान लगाया जा सकता है।

मुंह में हरदम थुक आये। घर में अग्निकांड हों। अगर बचपन में पिता का साया सिर पर ना रहे। अगर हर कार्य में बुजदिली आडे आये। मुकदमों आदि पर ज्यादा खर्च होने लगे। शरीर के अंगो में हरकत करने या कराने की ताकत खत्म होने या कम होने लगे।

यदि आप अपने संबंधियों को धन या सम्पत्ति के लिये कोर्ट ले गये, दान में सफेद वस्तुयें जैसे चावल, दूध, चांदी आदि ली तो आपका सूर्य मंदा हो सकता है।

आपको निम्न स्थितियों में सूर्य के उपाय अवश्य करना चाहिए --

यदि आपका सूर्य किसी भी कारण से मंदा हो गया तो इसका विपरीत प्रभाव आपकी पत्नी, प्रेमिका और धन पर पड़ सकता है। आपकी माता या मौसी को अशुभ परिणामों का सामना करना पड़ सकता है। आपकी माता, मौसी या बुआ विधवा हो सकती हैं। यदि आपने भूमि, सम्पत्ति या औरत के संबंध में कोर्ट के मामलों में हिस्सा लिया तो आपका परिवार नष्ट हो सकता है। अपनी पत्नी के कारण आपका अपने रिश्तेदारों से विवाद हो सकता है। आपके घर में स्त्रियों की संख्या तुलनात्मक रूप से कम हो सकती है। आपको दूसरों के सामने हाथ फैलाने की आदत हो सकती है। लोग आपके एहसान को नहीं मानेंगे। आपके ससुराल में जान-माल का नुकसान हो सकता है। आपको आंखों से संबंधित कोई बीमारी हो सकती है।

आपको सूर्य के अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करना चाहिए --

यदि आपको स्त्रियों की वजह से कष्ट हो रहा है तो नारियल, बादाम एवं तेल धर्म स्थान में दान करें। गेंहू, गुड़ या लोहे के तवे का दान करना लाभदायक होगा। रविवार का व्रत रखें। लोगों की भलाई का काम करते रहें। अपने पुश्तैनी मकान में हैण्डपंप लगवायें। जल में गुड़ डालकर सूर्य को अर्घ्य दें। हरिवंश पुराण की कथा सुनना लाभदायक होगा। चावल, चांदी या दूध का दान न करें।

कुण्डली में अन्य ग्रहों एवं भावों का प्रभाव और उनका उपाय --

आपकी कुण्डली में सूर्य के साथ बैठे ग्रहों या सूर्य पर दृष्टि डालने वाले ग्रहों का भी प्रभाव पडता है। इस भाग में उन सारी स्थितियों का पता लगाया गया है एवं उनके परिणाम और उपाय दिए गये हैं।

आपकी कुण्डली में सूर्य और बुध दूसरे भाव में एक साथ स्थित हैं। लाल किताब के अनुसार, यह युति बृहस्पति का परिणाम प्रदान करती है। इन परिणामों का लाभ आपको अपनी आयु के 39वें वर्ष तक प्राप्त होगा। बुध की अपेक्षा सूर्य आपको अधिक परिणाम प्रदान करेगा, जो प्रायः अशुभ नहीं होंगे। इस युति में बुध कमजोर रहता है। बुध से जुड़ी हुई चीजें सूर्य की सहायता करती हैं। अगर आप स्वयं पर यकीन रख कर आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ेंगे, तो आपको सफलता और लाभ प्राप्त होंगे। युवावस्था में आपका भाग्योदय होगा। आप बिना किसी सहारे के आगे बढ़ेंगे। आपकी जीवनसाथी दृढ़ मनोशक्ति वाली होंगी। उनके चेहरे पर कोई निशान हो सकता है। आप रोग मुक्त रहेंगे और आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। आप मानसिक और शारीरिक रूप से मजबूत होंगे। यदि सूर्य अशुभ हो जाये तो भाग्य आपका साथ नहीं दे सकता है। आपकी आर्थिक स्थिति ठीक नहीं हो सकती है।

कुण्डली में चन्द्रमा देव का प्रभाव और उपाय

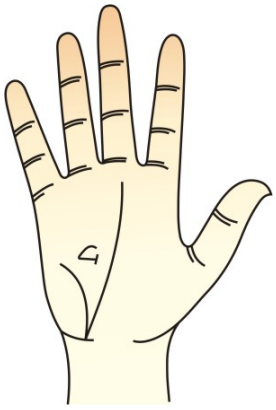

निम्न समयावधि में आपको चन्द्रमा का अच्छा या बुरा फल प्राप्त होगा

(09/08/1964 से 09/08/1965 तक, 10/08/1999 से 08/08/2000 तक, 10/08/2034 से 09/08/2035 तक)

आपकी कुण्डली में चन्द्रमा नौवें भाव में स्थित है। आप विनम्र, परोपकारी और सुशील होंगे। आपको सताये हुये लोगों से सहानुभूति होगी और आप उनकी सदैव मदद करेंगे। आप समाज में सम्मानित व्यक्ति होंगे। आपको पैतृक सम्पत्ति मिलेगी और आप इससे अधिक लाभ प्राप्त करेंगे। आपका जीवन खुशियों और आराम से पूर्ण होगा। आप धन संग्रह करेंगे। 34 साल के बाद आपकी आर्थिक स्थिति उत्तम होगी, लेकिन 48 साल की आयु के बाद आप और धनी होंगे। 24 साल की आयु के दौरान चन्द्रमा आपको शुभ परिणाम प्रदान करेगा। आपको यात्रा करना पसन्द होगा। आप पवित्र स्थानों की भी यात्रा करेंगे। संगीत में आपकी रूचि होगी। आप धार्मिक होंगे और परोपकारी कार्य करेंगे। आप काम करने में दक्ष होंगे। आप गणित में निपुण होंगे। आप विदेश यात्रा पर जा सकते हैं।

अपने पिता से आपके संबंध मधुर होंगे और आप उनका ध्यान रखेंगे। आपको संतान का सुख प्राप्त होगा। आपको सावधानीपूर्वक व्यवहार करना चाहिये। आप बहुत सज्जन होंगे। यदि आप आक्रमक होने का प्रयास करेंगे तो आपको परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। विनम्र होना आपके लिये लाभकारी होगा। आप अपने जीवन में प्रगति के शिखर पर पहुँचेंगे। आप शराफतपसंद, साफ दिल वाले एवं सबकी भलाई चाहने वाले होंगे। आपको धार्मिक अनुष्ठानों, तीर्थ स्थानों की यात्रा आदि में बहुत रूचि होगी। आप दीर्घायु होंगे। आपको जमीन-जायदाद का सुख प्राप्त होगा। आप पागलों के डाक्टर हो सकते हैं। आप सामाजिक कामों में रूचि रखेंगे एवं जरूरतमंद लोगों की मदद करने में आगे रहेंगे। आपकी आयु के साथ-साथ आपकी आर्थिक स्थिति में भी सुधार होता रहेगा। आपको समुद्री कामों से काफी लाभ प्राप्त हो सकता है।

आपको चन्द्रमा के शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न परहेज करना चाहिए --

पराई औरतों के साथ अनैतिक संबंध न रखें। झूठ न बोलें। अपनी आलमारी में चांदी का एक चौकोर टुकड़ा रखें। अपना चाल-चलन ठीक रखें। चावल, चांदी, दूध आदि का कारोबार न करें। जूठा भोजन न करें। झूठ न बोलें। घर की छत पर पानी न डलवायें।

निम्न शारीरिक/पारिवारिक/आर्थिक अथवा सामाजिक लक्षणों के आधार पर भी चन्द्रमा के अशुभ होने का अनुमान लगाया जा सकता है।

ननिहाल की स्थिती ठीक ना हो। शादी या औलाद से संबंन्धित परेशानी हो। मूत्र संबंन्धित बीमारी लग जाये। महसूस करने की ताकत खत्म हो जाये। दुध देने वाले जानवर मर जायें।

यदि आप धर्म के विरूद्ध कार्य करेंगे, धर्म के नाम पर धन एकत्र करेंगे, अपनी माता को सतायेंगे या उनका विरोध करेंगे तो आपका चन्द्रमा कमजोर हो सकता है।

आपको निम्न स्थितियों में चन्द्रमा के उपाय अवश्य करना चाहिए --

यदि आपका चन्द्रमा किसी कारणवश कमजोर हो जाता है तो आपकी सोच निम्न स्तर की होगी। यदि आप चांदी, चावल, पानी आदि सफेद चीजों का व्यापार करेंगे तो उसमें आपको हानि हो सकती है। आप धर्म के नाम पर मांग कर खाने वाले होंगे। चावल एवं चांदी के व्यापार से आपको हानि हो सकती है। आपकी आर्थिक स्थिति 34 वर्ष के बाद बेहतर होगी। आपकी माता को आंख से संबंधित बीमारी हो सकती है। आपको मानसिक रोग भी हो सकती है।

आपको चन्द्रमा के अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करना चाहिए --

तीर्थयात्रा पर जायें या धार्मिक कार्य करें। पानी में चार सूखे नारियल प्रवाहित करें। गरीब मजदूरों को दूध पिलायें। मछलियों को चावल खिलायें एवं सांप को दूध पिलायें। तीर्थ यात्रा करें। सोमवार का व्रत रखें। शिव जी की पूजा करें। रात में एक बर्तन में दूध भरकर रखें एवं सुबह उसे कीकर के पेड़ की जड़ में डाल दें। माता या माता समान स्त्री से लड़ाई-झगड़ा न करें। धर्म-कर्म के काम करते रहें। हर चंद्र ग्रहण के समय 4 श्री फल जल प्रवाह करें।

कुण्डली में अन्य ग्रहों एवं भावों का प्रभाव और उनका उपाय --

आपकी कुण्डली में चन्द्रमा के साथ बैठे ग्रहों या चन्द्रमा पर दृष्टि डालने वाले ग्रहों का भी प्रभाव पडता है। इस भाग में उन सारी स्थितियों का पता लगाया गया है एवं उनके परिणाम और उपाय दिए गये हैं।

आपकी कुण्डली में चौथे भाव में कोई न कोई ग्रह स्थित है। आपको अपने माता-पिता का

सुख लंबे समय तक प्राप्त होगा। यदि आप धर्म–कर्म में विश्वास रखें और दूसरों पर दया करें तो आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी।

आपकी कुण्डली में शुक्र तीसरे भाव में स्थित है। आपकी 24 वर्ष से 27 वर्ष की आयु के बीच आपकी माता को दृष्टि से संबंधित समस्या आ सकती है।

आपकी कुण्डली में चौथे भाव में राहु या केतु या शनि स्थित है। आप संतान की तरफ से चिंतित रह सकते हैं।

कुण्डली में मंगल देव का प्रभाव और उपाय

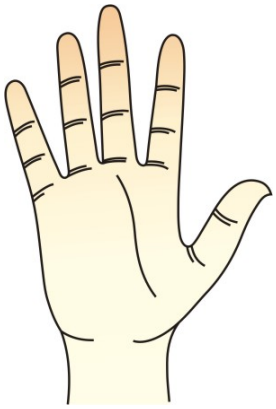

निम्न समयावधि में आपको मंगल का अच्छा या बुरा फल प्राप्त होगा

(09/08/1968 से 09/08/1974 तक, 10/08/2003 से 09/08/2009 तक, 10/08/2038 से 08/08/2044 तक)

आपकी कुण्डली में मंगल दसवें भाव में स्थित है। आपका संतान पक्ष कमजोर हो सकता है। आपकी 45 साल की आयु तक संतान सुख के मामले में आपका समय मध्यम रहेगा। यदि आप सरकारी नौकरी में हैं तो आप एक उच्च पद प्राप्त कर सकते हैं। आप एक विख्यात सामाजिक कार्यकर्ता होंगे। आप धनी होंगे। आपको सही या गलत तरीके से बहुत धन प्राप्त होगा और आप बड़ी सम्पत्ति के मालिक बनेंगे। 32 से 64 साल की आयु के बीच आप बहुत धन कमायेंगे। आपको सुख के सब साधन प्राप्त होंगे और आप एक राजसी जीवन व्यतीत करेंगे। आपके जन्म के बाद आपके पिता की आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ होगा। आपको पौत्र और प्रपौत्र का सुख प्राप्त होगा। आपका वैवाहिक जीवन खुशहाल होगा। कई शुभ आयोजन आपके घर पर आयोजित होंगे। कुल मिलाकर आपका जीवन सुखी और आनन्दपूर्ण होगा।

आपका जन्म भले ही गरीब परिवार में हुआ हो, लेकिन आपके जन्म के बाद आपके परिवार की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी। आप अपने परिवार को तारने वाले होंगे। यदि आपका बड़ा भाई है तो आपको कम से कम एक पुत्र संतान जरूर होगा। आप दीर्घायु होंगे एवं आपको गृहस्थी का पूर्ण सुख प्राप्त होगा। यदि आप कुरूप, अपाहिज या निःसंतान व्यक्ति की सेवा करेंगे तो आपको मंगल का काफी शुभ फल प्राप्त होगा। आपको अपने घर का सोना नहीं बेचना चाहिए, आपकी संतान एवं परिवार को अशुभ फल प्राप्त हो सकते हैं। आपको जादू–टोना, तंत्र–मंत्र आदि में रूचि हो सकती है।

आपको मंगल के शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न परहेज करना चाहिए ––

सोना न बेचें। दूध के उबलने के बाद उसे चूल्हे या स्टोव पर न गिरने दें।

निम्न शारीरिक/पारिवारिक/आर्थिक अथवा सामाजिक लक्षणों के आधार पर भी मंगल के अशुभ होने का अनुमान लगाया जा सकता है।

आंख में परेशानी हो या कोई खराबी हो। संतान पैदा होते ही खत्म हो जाये। भाई–भतीजे की अचानक मौत हो जाये। ननिहाल या ससुराल में अचानक परेशानीयां खड़ी होने लगें। चोरी या डकैती के मुकदमें में फँस जायें और सजा हो जाये। एकाएक गरीबी आ जाये। औलाद पैदा होने में परेशानी हो।

यदि आप पुलिस या सैन्य विभाग से झगड़ा करेंगे, असामाजिक कार्य करेंगे, नमक या नमकीन पदार्थ अधिक प्रयोग करेंगे तो आपका मंगल कमजोर हो सकता है।

आपको निम्न स्थितियों में मंगल के उपाय अवश्य करना चाहिए --

यदि आपका मंगल किसी कारणवश कमजोर हो जाता है तो आपके जीवन का 22वॉ साल परेशानियों से भरा होगा। यदि आप सोना बेचेंगे तो आपकी संतान को समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। आप बदनाम हो सकते हैं। आप पर चोरी का कलंक लग सकता है और इसके लिये आपको कारावास हो सकती है। आपको जेल विभाग में काम करना पड़ सकता है। यदि आप अपने ननिहाल में रहते हैं तो आपको बहुत अच्छे परिणाम प्राप्त नहीं हो सकते हैं। दूध उबल कर स्टोव या चूल्हे पर न गिरने दें, अन्यथा पारिवारिक कलह हो सकता है। आपको प्राप्त होने वाले संतान सुख में कमी हो सकती है। सरकारी कामों से आपको धन हानि हो सकती है।

आपको मंगल के अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करना चाहिए --

हनुमान जी की पूजा करें। मीठा भोजन करें। हिरण पालें। चाचा, ताया की सेवा करें। काला, काना एवं निःसंतान व्यक्ति की सेवा करें। महा गायत्री का पाठ करें। मंगलवार का व्रत रखें। मृगछाला पर सोयें। 10 किलो काले चने रात को भिगो कर सुबह हिरण को खिलायें।

कुण्डली में अन्य ग्रहों एवं भावों का प्रभाव और उनका उपाय --

आपकी कुण्डली में मंगल के साथ बैठे ग्रहों या मंगल पर दृष्टि डालने वाले ग्रहों का भी प्रभाव पडता है। इस भाग में उन सारी स्थितियों का पता लगाया गया है एवं उनके परिणाम और उपाय दिए गये हैं।

आपकी कुण्डली में मंगल और केतु एक साथ दसवें भाव में स्थित हैं। लाल किताब के अनुसार, इस युति को बाघ की नस्ल का कुत्ता कहते हैं। सामान्यतः यह युति अपने भाव के अनुसार प्रभाव डालती है। यदि आपकी कुण्डली में शुक्र और शनि भी शुभ हैं तो आपको बहुत उत्तम परिणाम प्राप्त होंगे। शनि एवं शुक्र के साथ होने पर केतु उच्च का हो जाता है। चन्द्रमा और शनि के साथ होने पर केतु कमजोर होगा, किन्तु आपको मंगल का शुभ फल प्राप्त होगा। यदि आपकी कुण्डली में मंगल अशुभ है तो आपकी मृत्यु पितृऋण, पुत्र के द्वारा, गोली लगने या कुत्ते के काटने से हो सकती है। मंगल आपकी लेखन क्षमता को कम या समाप्त कर सकता है। आपको 24वें वर्ष की आयु तक संतान की प्राप्ति होगी। आप जो भी काम करेंगे, चाहे वह गलत हो या सही, उसमें सबको पीछे छोड़ देंगे। शुद्ध चांदी के बर्तन में शहद भरकर उसे मकान की नींव के नीचे दबा देने से (केतु का उपाय) आपको शुभ कामों में यश की प्राप्ति होगी। यदि केतु के कारण मंगल का कमजोर प्रभाव मिलता है, तो घर में एक चितकबरा कुत्ता पालें। इस युति के अशुभ होने पर 28वें वर्ष की आयु से आपके स्वास्थ्य में गिरावट आ सकती है और 45 वर्ष की आयु तक आपका स्वास्थ्य खराब रह सकता है। इस दशा में बृहस्पति की स्थिति के आधार पर शुभ या अशुभ का निर्णय किया जाता है। इस स्थिति में बृहस्पति का पक्का भाव (11वां भाव) निर्णायक साबित होता है। चन्द्रमा के उपाय करने से केतु की अशुभता दूर होगी। उपाय – मंगल और केतु की युति के अशुभ परिणामों से बचने के लिए आपको सात प्रकार के फल, सात प्रकार के जानवरों के दूध से धोकर उन्हें श्मशान में किसी सुनसान जगह पर दबा देना चाहिए। ऐसा न करने पर आपको 24 से 28 वर्ष की आयु में कंपकपी रोग हो सकता है। आपका हाथ, पैर या माथा हिल सकता है। आपके परिवार के पुरूष सदस्यों की मृत्यु हो सकती है या मृत्युतुल्य कष्ट हो सकता है। आपके गृहस्थ जीवन एवं रोजगार में समस्यायें हो सकती हैं। अशुभ असर को दूर करने के लिए अपने घर की नींव में चांदी एवं शहद दबायें। व्यापारिक यात्रा, या काम पर जाने से पहले 11 रुपये किसी गुप्त जगह पर रख कर चले जाएं। आपको हर हालत में सफलता प्राप्त होगी। वापिस आने पर इन गुप्त रुपयों को किसी गरीब को दान में दें।

कुण्डली में बुध देव का प्रभाव और उपाय

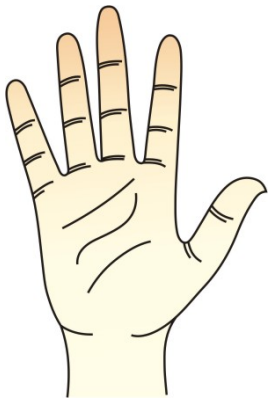

निम्न समयावधि में आपको बुध का अच्छा या बुरा फल प्राप्त होगा

(10/08/1974 से 08/08/1976 तक, 10/08/2009 से 09/08/2011 तक, 09/08/2044 से 09/08/2046 तक)

आपकी कुण्डली में बुध दूसरे भाव में स्थित है। आप अपने भाग्य के रचयिता स्वयं होंगे। आप परिश्रमी होंगे और अपनी मेहनत से धन कमाकर धनी होंगे। आपकी कुण्डली में राजयोग है। आप एक राजसी जीवन व्यतीत करेंगे। आप अपने जीवनसाथी से बहुत प्रेम करेंगे और उनका ख्याल रखेंगे। आपके ससुराल वाले धनी नहीं हो सकते हैं। आपको संगीत में रूचि हो सकती है। आपका मन स्थिर नहीं होगा और आप स्वार्थी होंगे। आपको अपनी पुत्री से अधिक सुख प्राप्त नहीं होगा। आप विद्वान और उपदेशक होंगे। आपको सरकार से लाभ प्राप्त होगा। आपके दादा या पिता बहुत धनी होंगे। आपकी आय का स्रोत उत्तम होगा।

आप अपने जन्मस्थान से दूर रहेंगे। आपका दिमाग तीव्र होगा और आप सही व तुरन्त जबाव देने वाले होंगे। जो भी आपसे मिलेगा /मिलेगी, उसे लाभ प्राप्त होगा। आपके परिवार में महिलाओं की संख्या अधिक हो सकती है। आप अपनी संतान के कारण चिन्तित रह सकते हैं। आप एक साधु और राजा दोनो की तरह व्यवहार करेंगे। यदि आप धन का लेन–देन करें तो आप बहुत सफल हो सकते हैं। आपके पिता दीर्घायु होंगे एवं आपको उनका सुख प्राप्त होता रहेगा, परन्तु चाहते हुए भी आप अपने पिता को सुख नहीं दे सकते हैं तथा आप स्वयं अपने पुत्रों से सुख प्राप्त नहीं कर सकते हैं।

आपका भोला स्वभाव हर जगह आपकी मदद करेगा। आपके काम खुद–व–खुद होते रहेंगे। आपका मस्तक उभरा हो सकता है, जो आपके बुलंद भाग्य की निशानी होगी। आपकी बहन, बुआ, बेटी सभी सुखी रहेंगी। आमतौर पर आपके ससुराल की आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी नहीं हो सकती है, लेकिन यदि आपके ससुराल वाले आपके साथ मधुर संबंध बना कर रखेंगे तो उनकी तरक्की होगी।

आपको बुध के शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न परहेज करना चाहिए ––

नाक छेदवा कर कम से कम 96 घंटे तक उसमें चांदी पहनें। कुंआरी कन्याओं या कुंआरी साली की सेवा करें। फिटकरी से दांत साफ करें। धर्म स्थान में दूध, चावल, चांदी आदि का दान करें। 2 किलो साबुत मूंग की दाल मंदिर में देते रहें।

निम्न शारीरिक/पारिवारिक/आर्थिक अथवा सामाजिक लक्षणों के आधार पर भी बुध के अशुभ होने का अनुमान लगाया जा सकता है।

सुंघने की शक्ति खत्म हो जाये। सामने के दांत झड़ जायें। सीढ़ीयों से गिरकर हाथ–पांव तुड़वा बैठें। बहन, बुआ, मौसी, साली या अपनी बेटी की हालत ठीक ना हो। कोई आपको धोखा दे दे। अपनी औलाद से परेशानी हो जाये।

यदि आप सांसारिक साधुओं से सम्बन्ध रखेंगे, जुआ खेलेंगे या लॉटरी सट्टे आदि में धन निवेश करेंगे तो आपका बुध कमजोर हो सकता है।

आपको निम्न स्थितियों में बुध के उपाय अवश्य करना चाहिए ––

यदि आपका बुध किसी कारणवश कमजोर हो जाता है तो आपके पिता का सुख कम हो सकता है। आप पर कलंक लग सकता है या आप बदनाम हो सकते है। यदि आप मांसाहारी भोजन करेंगे तो आपको अधिक यात्रा करनी पड़ सकती है। आपकी यात्रायें लाभप्रद नहीं हो सकती हैं। आपके जन्म के पहले आपके पिता की आर्थिक स्थिति ठीक होगी, लेकिन आपके जन्म के बाद आपके पिता धन बर्बाद होना शुरू हो सकता है। आपकी बहन, बुआ, बेटी की स्थिति ठीक नहीं हो सकती है। जुआ–सट्टा से आपको नुकसान हो सकता है। आपको पुरूष संतान की तुलना में कन्या संतान अधिक हो सकती है। आपकी 16वें, 21वें, 34वें या 36वें वर्ष में आपके पिता को मृत्युतुल्य कष्ट हो सकता है। आपके घर में टूटे एवं खराब खिलौने, घड़ियां आदि हो सकती हैं, जो आपके लिए हानिकारक हो सकता है। आपके घर में आंगन नहीं हो सकता है तथा आपके घर में हरे रंग का अधिक प्रयोग हो सकता है, जैसे मनी प्लांट, तुलसी के पौधे, हरे रंग का पेंट, चादर, पर्दे, कपड़े आदि।

आपको बुध के अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करना चाहिए ––

यदि आपके घर में बिना खोला हुआ सूत या ऊन का गोला पड़ा हुआ है तो उसे खोल दें। हरे रंग का प्रयोग कम से कम करें। बहन, बुआ, बेटी, साली आदि से मधुर संबंध रखें। साधू–फकीर से दूर रहें एवं उनसे कोई ताबीज आदि न लें। तोता, भेड़, बकरी आदि न पालें और न ही उनकी सेवा करें।

कुण्डली में अन्य ग्रहों एवं भावों का प्रभाव और उनका उपाय --

आपकी कुण्डली में बुध के साथ बैठे ग्रहों या बुध पर दृष्टि डालने वाले ग्रहों का भी प्रभाव पडता है। इस भाग में उन सारी स्थितियों का पता लगाया गया है एवं उनके परिणाम और उपाय दिए गये हैं।

आपकी कुण्डली में बुध दूसरे भाव में एवं बृहस्पति नौवें या बारहवें भाव में स्थित है। आप दूसरों को बेवजह सलाह/राय दे सकते हैं। समाज में आपकी प्रतिष्ठा होगी। आपकी माता को भी शुभ फल प्राप्त होंगे।

आपकी कुण्डली में छठा या आठवां भाव खाली है। आप बुद्धिमान होंगे एवं मानसिक रूप से स्वस्थ होंगे।

कुण्डली में बृहस्पति देव का प्रभाव और उपाय

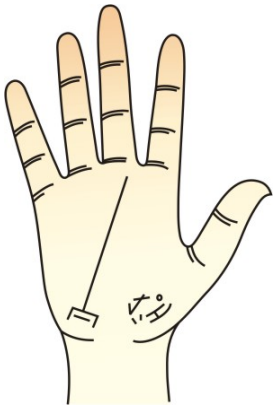

निम्न समयावधि में आपको बृहस्पति का अच्छा या बुरा फल प्राप्त होगा

(09/08/1956 से 09/08/1962 तक, 10/08/1991 से 09/08/1997 तक, 10/08/2026 से 08/08/2032 तक)

आपकी कुण्डली में बृहस्पति बारहवें भाव में स्थित है। आप विद्वान और परोपकारी होंगे। आपके परोपकारी काम आपके भाग्य में वृद्धि करेंगे। आप अपना अधिकतर समय पूजा में व्यतीत करेंगे और इससे आपके भाग्य में बढ़ोतरी होगी। धन आपके लिये बहुत महत्वपूर्ण नहीं होगा। आपको भौतिक संसार से अधिक मोह नहीं होगा। आपके पास बहुत धन होगा, लेकिन आपको अधिक धन का लालच नहीं रहेगा। यदि आप नियमित रूप से ध्यान उपासना करेंगे तो आपको अधिक लाभ प्राप्त होगा। आपका स्वभाव साधु की तरह होगा। आप शुभ कार्यों में धन खर्च करेंगे। आप कोई गलत काम नहीं करेंगे। खर्चे आपके लिये चिन्ता की बात नहीं होगी। आप कोई गलत काम नहीं करेंगे। यदि आपने ऐसा किया तो आपको बड़ी हानि हो सकती है। आपकी संतान आपकी चिन्ता का कारण हो सकती है। आपको जीवन में सुख के सभी साधन उपलब्ध होंगे।

आपका परिवार बढ़ेगा और आप खुश रहेंगे। आप चिन्ताओं से मुक्त रहेंगे। आपका आशीर्वाद फलदायी होगा। यदि आपको कोई शाप देगा तो उसका आप पर प्रभाव नहीं होंगा। यदि आप दलाल हैं तो आपको लाभ प्राप्त होगा। आप जितना दूसरों की भलाई करेंगे, आपका अपना भाग्य उतना ही प्रबल होगा। आपके पास लक्ष्मी खुद आयेगी, यानि कम मेहनत से भी आपको भरपूर सफलता प्राप्त होगी। आपका आर्शीवाद कभी व्यर्थ नहीं जाएगा। जो आपसे दुश्मनी करेगा या परेशान करेगा, वो बर्बाद हो जाएगा। आपके बचपन में आपके पिता की आर्थिक स्थिति बहुत बढ़िया नहीं हो सकती है। आपको दूसरों को कष्ट नहीं देना चाहिए एवं बहुत ज्यादा नहीं बोलना चाहिए। बारहवें भाव में स्थित बृहस्पति का अधिक शुभ फल प्राप्त करने के लिए आपको हल्दी या केसर का तिलक लगाना चाहिए। कोई भी कार्य करने से पहले अपना नाक अवश्य साफ करें।

आप बहुत अधिक आशावादी होंगे। आपके आस पास के व्यक्तियों में आपके प्रति विश्वास होगा। आप दूसरों की सहायता करेंगे। 16 से 21 वर्ष की आयु के बीच आपका अपमान भी हो सकता है, लेकिन यह अपमान दूसरों की भलाई करने की वजह से होगा। आप दूसरों की बुराई का जवाब भलाई करके देंगे। आप धर्मात्मा एवं विद्वान व्यक्ति होंगे एवं विदेश यात्रा कर सकते हैं। लोगों की भलाई करने में आपको प्रसन्नता होगी। आप धर्म के मार्ग से विचलित नहीं होंगे।

आपको बृहस्पति के शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न परहेज करना चाहिए --

दूसरों को धोखा न दें। झूठी गवाही न दें। गले में माला न पहनें। ऐसा कोई काम न करें, जिससे लोग आपके विरूद्ध हो जायें।

निम्न शारीरिक/पारिवारिक/आर्थिक अथवा सामाजिक लक्षणों के आधार पर भी बृहस्पति के अशुभ होने का अनुमान लगाया जा सकता है।

किसी कारणवश शिक्षा में रूकावट आ जाये। सोना खो जाये या चोरी हो जाये। चोटी रखने वाले स्थान पर का बाल गिरने लगे। गलत इल्जाम लगने लगे। दिमागी कार्यों में मन ना लगे। गले में माला पहनने का मन करे।

यदि आपने असामाजिक काम किये, लोगों से हमेशा धन उधार माँगा, किसी को धोखा दिया तो आपका बृहस्पति कमजोर हो सकता है।

आपको निम्न स्थितियों में बृहस्पति के उपाय अवश्य करना चाहिए --

यदि आपका बृहस्पति किसी कारणवश कमजोर हो जाता है तो आपको परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। अधिक वाचाल होना आपके लिये अच्छा नहीं हो सकता है। आध्यात्म की राह आपके लिये लाभकारी नहीं हो सकती है। यदि आपने धोखेबाजी या बेईमानी की, झूठी गवाही दी, साधु-संतों को अपमानित किया, पीपल का पेड़ कटवाया, मांस-मदिरा का सेवन किया तो आपको अशुभ फल प्राप्त होंगे। आपकी रातों की नींद हराम हो सकती है। गरीबी आपका दामन नहीं छोड़ सकती है। बदी के कामों की वजह से मृत्युतुल्य कष्ट हो सकता है। आपकी विदेश यात्रा रूक सकती है या विदेश यात्रा के दौरान हानि हो सकती है। आप साधुओं का अपमान कर सकते हैं तथा गले में माला पहनना नुकसानदायक होगा।

आपको बृहस्पति के अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करना चाहिए --

पीपल के वृक्ष में पानी डालें। वृद्ध ब्राह्मण की सेवा करें तथा उन्हें पीले वस्त्र दान करें। केसर या हल्दी का तिलक लगायें। पिता की सेवा करें। यदि आपकी कुण्डली में बृहस्पति एवं चंद्रमा एक साथ बैठे हुए हैं तो बरगद के वृक्ष में पानी डालें। सिर पर चोटी रखें। अपना सिर हमेशा ढक कर रखें। साधु-सन्यासियों की सेवा करें। रात को सोते समय अपने सिरहाने सौंफ एवं पानी रखें। अपने गुरू का सम्मान करें। हरि पूजन करें। पुखराज पहनें। गरूड़-पुराण का पाठ करवायें। नाक साफ करके काम शुरू करें या काम पर जायें।

कुण्डली में अन्य ग्रहों एवं भावों का प्रभाव और उनका उपाय --

आपकी कुण्डली में बृहस्पति के साथ बैठे ग्रहों या बृहस्पति पर दृष्टि डालने वाले ग्रहों का भी प्रभाव पडता है। इस भाग में उन सारी स्थितियों का पता लगाया गया है एवं उनके परिणाम और उपाय दिए गये हैं।

आपकी कुण्डली में बृहस्पति पर किसी भी ग्रह की दृष्टि नहीं पड़ रही है। यदि आप बुरे कार्य करेंगे तो आपको एवं आपके पुत्रों को अशुभ फल प्राप्त होगा।

आपकी कुण्डली में बृहस्पति और शनि एक साथ बारहवें भाव में स्थित हैं। आप भाग्यशाली होंगे। राहु और केतु का अशुभ प्रभाव आप पर नहीं पड़ेगा। आपको सातवें भाव में स्थित बृहस्पति और शनि का भी फल प्राप्त होगा। आपके भाग्य का सितारा आपके विवाह के बाद चमकेगा और आप उन्नति के पथ पर अग्रसर होंगे। यदि आपने सोने का दान किया तो आपकी रात्रि की नींद उड़ सकती है। इस अशुभता के निवारण हेतु आपको चन्द्रमा के उपाय करने चाहिए। यदि इस ग्रह युति से आपको किसी तरह का अशुभ फल प्राप्त हो रहा हो तो मंदिर में दूध दान करें, शुभ फल की प्राप्ति होगी।

कुण्डली में शुक्र देव का प्रभाव और उपाय

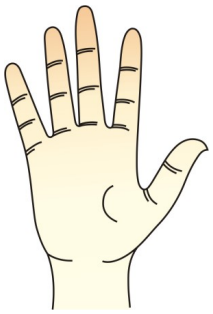

निम्न समयावधि में आपको शुक्र का अच्छा या बुरा फल प्राप्त होगा

(10/08/1965 से 08/08/1968 तक, 09/08/2000 से 09/08/2003 तक, 10/08/2035 से 09/08/2038 तक)

आपकी कुण्डली में शुक्र तीसरे भाव में स्थित है। आपके घर पर चोरी नहीं होगी। आप भाग्यशाली होंगे और आपकी पत्नी चरित्रवान होगी। वह आपसे जीवन भर प्रेम करेगी और आपकी सहायता करेगी। आपकी संतानों की संख्या अधिक हो सकती है। आप कई बार तीर्थयात्रा पर जायेंगे। सभी आपसे प्रेम करेंगे। आपके व्यय अधिक हो सकते हैं। आपके जीवनसाथी आपको हर काम में मदद करेंगी या आप जो भी काम उनके नाम पर करेंगे, उसमें आपको लाभ होगा। महिलाओं, लक्ष्मी और गाय की सेवा से आपको लाभ मिलेगा। आप दूसरी औरतों की तरफ आकर्षित हो सकते हैं। अधिक प्रयास किये बिना आप धन कमायेंगे। आपकी आय उत्तम होगी। आपको जीवन के सभी सुख प्राप्त होंगे, लेकिन आप परेशानी महसूस कर सकते हैं। आपको माता–पिता का सुख लम्बे समय तक मिलेगा। आपकी पत्नी नौकरी करेंगी और बुरे समय में आपकी मदद करेंगी। आपके घर कभी चोरी नहीं हो सकती है। विपरीत लिंगी व्यक्तियों के साथ आपके संबंध बहुत जल्द बन सकते हैं।

आपको अपने जीवनसाथी की इज्जत करनी चाहिए तथा उनकी सलाह माननी चाहिए, इससे आपको प्राप्त होने वाले शुभ फलों में बढ़ोतरी होगी। आपकी पत्नी हमेशा आपका साथ देंगी। आपके जीवनसाथी के रहते कोई भी आपका बुरा नहीं कर सकेगा। आप बहुत ही सुन्दर होंगे। आपकी पत्नी नेक, ईमानदार लेकिन कोधी हो सकती हैं। आप साहसी होते हुए भी उनसे दबकर रहेंगे। आपका अपना बनाया हुआ मकान नहीं हो सकता है। यदि आप कोई मकान बनवाते हैं तो आपको उसका शुभ फल प्राप्त नहीं होगा। आप हर एक व्यक्ति के प्रिय होंगे। आप सच्चे प्रेमी होंगे। विपरीत लिंगी लोग आपके प्रति बहुत जल्द आकर्षित हो सकते हैं। आपके पिता या दादा की दो शादियां हो सकती हैं। आपके परिवार में कोई साहूकारी कर सकते हैं। आपके परिवार में पुत्र संतान की तुलना में कन्या संतान कम हो सकती है।

आपको शुक्र के शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न परहेज करना चाहिए --

अपने पुश्तैनी मकान को नष्ट न करें। अपना चरित्र ठीक रखें। अवैध संबंध स्थापित न करें। अपनी पत्नी का सम्मान करें एवं उन्हें नीचा न दिखायें। घर में नृत्य एवं संगीत का आयोजन न करें।

निम्न शारीरिक/पारिवारिक/आर्थिक अथवा सामाजिक लक्षणों के आधार पर भी शुक्र के अशुभ होने का अनुमान लगाया जा सकता है।

पराई स्त्री से संबंन्ध बन जाये। बिना बीमारी के अंगुठा सुन्न पड़ जाये। जीवनसाथी का स्वास्थ्य खराब हो जाये या उसे कोई दिमागी बीमारी लग जाये। खांसते वक्त मुंह से खुन आये। सास बहु में लगातार झगड़ा हो।

यदि आपने पराई औरतों से अनैतिक संबंध रखे, पैतृक घर की दहलीज तोड़ी, रास रंग में रूचि ली तो आपका शुक्र कमजोर हो सकता है।

आपको निम्न स्थितियों में शुक्र के उपाय अवश्य करना चाहिए --

यदि आपका शुक्र किसी कारणवश कमजोर हो जाता है तो आपकी पत्नी आप पर प्रभावी रहेंगी, उनका कोध और साहस आपको आश्चर्यचकित कर देगा। आपको भवन सुख प्राप्त नहीं हो सकता है। यदि आप घर बनाते हैं तो वह बर्बाद हो सकता है। आपको माता का सुख नहीं मिलेगा। यदि वह आपकी 34 साल की आयु तक जीवित रहती हैं तो वह दीर्घायु

होंगी। आपको परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। यदि आपकी सौतेली माता हैं तो आपको उनसे कोई लाभ प्राप्त नहीं होगा। यदि आप अपने ससुराल वालों के साथ कोई साझेदारी करते हैं या वे आपके किसी काम में मदद करते हैं तो आपको हानि हो सकती है। आपको अपने भाई या संबंधियों के कारण आर्थिक हानि हो सकती है। आपको पैतृक सम्पत्ति से कोई लाभ नहीं प्राप्त हो सकता है। आपका स्वास्थ्य खराब हो सकता है। आप पराई स्त्रियों के कारण अपना धन एवं समय दोनों बर्बाद कर सकते हैं। आपको आर्थिक तंगी का सामना करना पड़ सकता है। आपकी बेटी एवं पत्नी को अशुभ फल प्राप्त हो सकता है। आपको अपने बनाये हुए मकान का सुख प्राप्त नहीं हो सकता है।

आपको शुक्र के अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करना चाहिए --

भाई की स्त्री की सेवा करें। मंगल की वस्तुओं का प्रयोग करें। अतिथियों की सेवा करें। अपने पहनावे पर ध्यान दें। ब्याही बहन-बेटी के ससुराल वालों के साथ साझेदारी में कोई काम न करें। गाय पालें या गाय की सेवा करें।

कुण्डली में शनि देव का प्रभाव और उपाय

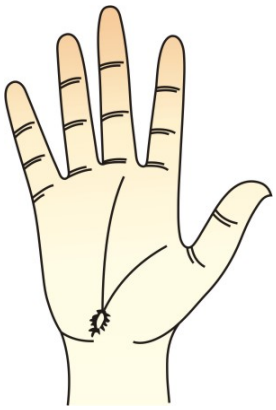

निम्न समयावधि में आपको शनि का अच्छा या बुरा फल प्राप्त होगा

(09/08/1976 से 09/08/1982 तक, 10/08/2011 से 09/08/2017 तक, 10/08/2046 से 08/08/2052 तक)

आपकी कुण्डली में शनि बारहवें भाव में स्थित है। आप धन की परवाह नहीं करेंगे और मुक्त हाथों से खर्च करेंगे। आपको पैतृक सम्पत्ति मिलेगी। आप जरूरतमंदों की मदद करेंगे और उनको बसायेंगे। आपका कोई शत्रु नहीं होगा। आप धनी और खुशहाल होंगे। आपकी मनोकामनायें देर-सबेर पूरी हो जायेंगी। आपके पास विभिन्न प्रकार की सम्पत्ति होगी। आपका संबंध एक कुलीन परिवार से होगा। आप धन संग्रह करेंगे और एक सुखी जीवन व्यतीत करेंगे। आप अपने पूर्व जन्म की कामना के अनुसार कोई बड़ा काम पूर्ण करेंगे। आप ध्यान में निपुण होंगे। आप नेता या प्रमुख बनने का सम्मान प्राप्त करेंगे। यह आपकी आय और सुख के लिये शुभ होगा। आप अधिक चतुर होंगे। आपको रात्रि में पूरा सुख और आराम मिलेगा। यदि आप गंजे हैं तो आपके पास प्रचुर मात्रा में धन-दौलत हो सकता है। यदि आप मकान बनवा रहे हैं तो काम बीच में न रोकें, एक बार में ही पूरा मकान बनने दें, इससे आपके और मकान बनेंगे। आपको शुभ फल प्राप्त होंगे।

आपको धन-संपत्ति की परवाह नहीं हो सकती है। आपकी माता को कुछ कष्ट हो सकता है तथा पिता को धन संबंधी मामलों में अशुभ फल की प्राप्ति हो सकती है। यदि आप व्यापार करते हैं तो अपने व्यापार में आप बहुत सफल होंगे। हालाँकि आप पैसे के पीछे नहीं भागेंगे, लेकिन आपके पास कितनी भी संपत्ति क्यों न हो, आप दूसरों के साथ धोखा या फरेब करेंगे। आप अपने पूर्व जन्म के अधूरे कार्य को पूरा करेंगे एवं इस जन्म में कोई बड़ा काम करना चाहेंगे। आपके मकान में कोई अंधेरी कोठरी होगी। आप बुद्धिमान एवं परोपकारी होंगे तथा दूसरों के भेद किसी के सामने उजागर नहीं करेंगे।

आपको शनि के शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न परहेज करना चाहिए --

अपने नाम पर प्लॉट खरीदकर मकान न बनायें। मांस-मदिरा का सेवन न करें। पराये धन एवं स्त्री से दूर रहें। जूठा भोजन न करें। झूठ न बोलें।

निम्न शारीरिक/पारिवारिक/आर्थिक अथवा सामाजिक लक्षणों के आधार पर भी शनि के अशुभ होने का अनुमान लगाया जा सकता है।

एकाएक मकान ढह जाये। अचानक घर में दुध देने वाला पशु मर जाये। घर में अगलगी की घटनाएं होने लगें। चमड़े का जुता/चप्पल खो जाये। छोटा भाई दुश्मनी करने लगे। परिवार के किसी ब्यक्ति की लड़ाई-झगड़े में मौत हो जाये। नशा करने की लत पड़ जाये। धोखे से पैसा कमाना शुरू कर दें। जमीन जायदाद का नुकशान होने लगे। बुढापा गरीबी में कटने लगे। कोई लाइलाज बीमारी लग जाये।

यदि आप जमीन खरीद कर मकान का निर्माण करते हैं, घर के अन्त में स्थित अंधेरे कमरे में खिड़की या रोशनदान बनाते हैं, हमेशा झूठ बोलते हैं, दूसरों का धन हड़पने का प्रयास करते हैं तो आपका शनि कमजोर हो सकता है।

आपको निम्न स्थितियों में शनि के उपाय अवश्य करना चाहिए --

यदि आपका शनि किसी कारणवश कमजोर हो जाता है तो आपको नेत्र विकार हो सकता है। यदि आपका चरित्रहीन औरतों के साथ संबंध है या आप मदिरा का सेवन करेंगे तो आपको अशुभ परिणाम प्राप्त होंगे। आपका एक से अधिक बार विवाह हो सकता है। आप वही करेंगे, जो आपकी पत्नी करने को कहेगी। कभी-कभी आप बहुत क्रोधित हो सकते हैं, जो आपके लिये हानिकारक होगा। आपको संतान सुख में बाधा आ सकती है और उसमें विलम्ब हो सकता है। आपको सम्पत्ति या किसी के नुकसान के संबंध में कानूनी समस्या का सामना करना पड़ सकता है। आपको पुलिस या कोर्ट द्वारा दंड मिल सकता है। आपको झूठ नहीं बोलना चाहिए, अपने चरित्र का ध्यान रखना चाहिए तथा मांस-मदिरा से दूर रहना चाहिए, अन्यथा शनि का अशुभ प्रभाव आपकी आंखों एवं स्वास्थ्य पर पड़ सकता है।

आपकी आमदनी कम एवं खर्चे अधिक हो सकते हैं। आप मांस-मदिरा का सेवन कर सकते हैं एवं आप सांपों की हत्या कर सकते हैं। आप छल-कपट से धन संग्रह कर सकते हैं, जिसके कारण आपको कारावास भी हो सकती है। आप लंबे चलने वाले मुकदमें में फॅस सकते हैं। यदि आपने अपने मकान की पिछली दीवार गिरा का छोड़ दी है तो आपके परिवार में असामयिक मौत हो सकती है या परिवारजन को मृत्युतुल्य कष्ट हो सकता है। आपको ऑखों से संबंधित बीमारियां हो सकती हैं।

आपको शनि के अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करना चाहिए --

अपना चाल-चलन ठीक रखें। अपने मकान के दक्षिणी कोने पर काले कपड़े में 12 बादाम स्थपित करें। 12 शनिवार मछलियों को बादाम खिलायें। अपने मकान में एक अंधेरी कोठरी जरूर रखें। शनिवार का व्रत रखें। तेल एवं शराब का दान करें। तांबे के बर्तन का प्रयोग करें। लकड़ी के चौरस पलंग पर सोयें।

कुण्डली में राहु देव का प्रभाव और उपाय

निम्न समयावधि में आपको राहु का अच्छा या बुरा फल प्राप्त होगा

(10/08/1947 से 09/08/1953 तक, 10/08/1982 से 08/08/1988 तक, 10/08/2017 से 09/08/2023 तक)

आपकी कुण्डली में राहु चौथे भाव में स्थित है। आप सद्गुणी, धनी और दीर्घायु होंगे। आप तीर्थस्थानों की यात्रा करेंगे। आप सज्जन होंगे और आरामदायक जीवन व्यतीत करेंगे। आप बड़ी सम्पत्ति के मालिक होंगे। आपको अपने संबंधियों से धन और सम्पत्ति प्राप्त होगी। आप दूसरों की मदद करेंगे और लोग आपको परोपकारी व्यक्ति मानेंगे। आप दयालु होंगे और आपको वाहन का सुख प्राप्त होगा। आप अपनी बहन और पुत्री के लिये धन खर्च करेंगे। आपको अपने ससुराल से धन और लाभ प्राप्त होते रहेंगे। आपके ससुराल वालों का धन बढ़ेगा। आप 24 साल की आयु के बाद धन संग्रह करेंगे। आपके पिता और संतान को

उत्तम परिणाम प्राप्त होंगे, परन्तु आपकी माता के साथ ऐसा नहीं हो सकता है। आपको भूमि, भवन, वाहन और जीवन के अन्य सुख प्राप्त होंगे। यदि आप सरकारी नौकरी में हैं तो आप अपने विभाग में एक उच्च पद प्राप्त करेंगे। आपको बन्दूक या पिस्तौल रखने का शौक होगा।

आप धर्मात्मा व्यक्ति होंगे, लेकिन आपको धन की कमी हो सकती है। आपको अपने पुराने मकान की केवल छत नहीं बदलनी चाहिए, बदलनी है तो दीवार भी बदलें। धन हानि हो सकती है। यदि केवल छत ही बदलनी पड़े तो पुरानी छत का मलबा नई छत बनाने के सामान में मिला लें। यदि आप राहु के चीजें अपनाते हैं या कायम करते हैं तो आप पूरी तरह से बर्बाद हो सकते हैं। अपने घर में कोयले की बोरियां न रखें। अपने घर के अंदर भट्ठी या तंदूर न बनायें। अपने घर की छत न बदलवायें। आपके पिता एवं पुत्र को शुभ फल प्राप्त होंगे, लेकिन आपकी माता को अशुभ फल प्राप्त हो सकते हैं। आपकी 24 वर्ष की उम्र के बाद आपके ननिहाल में स्थिति खराब होनी शुरू हो सकती है। धन का नुकसान हो सकता है।

आपकी माता का स्वास्थ्य आपके लिए चिंता का विषय हो सकता है। आपकी 12, 24 या 48 वर्ष आयु में या आपके पुत्र के जन्म के बाद आपके माता–पिता को शुभ फल प्राप्त होंगे। आप जासूसी कर सकते हैं या आपमें जासूसी का गुण हो सकता है। गंगा स्नान करना आपके लिए लाभदायक होगा। यदि आपको उधार दिया पैसा वापस नहीं मिल रहा है तो हमेशा अपनी जेब में चांदी की चार गोलियां रखें।

आपको राहु के शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न परहेज करना चाहिए --

घर की छत पर कोयला इत्यादि ईंधन न रखें। घर में या आंगन में धुआं न करें। झूठी गवाही न दें। तम्बाकू का सेवन न करें। माता समान स्त्री के साथ विवाह न करें और न ही अवैध संबंध रखें। गंगा स्नान करें। सीढ़ियों के नीचे रसोई घर न बनायें। एक साथ पूरा घर बनवायें।

निम्न शारीरिक/पारिवारिक/आर्थिक अथवा सामाजिक लक्षणों के आधार पर भी राहु के अशुभ होने का अनुमान लगाया जा सकता है।

अचानक ही परिवार के बड़ों में लड़ाई–झगड़ा होने लगे। मकान की छत बदलवानी पड़े। काला कुत्ता खो जाये। धर्म और धार्मिक कार्यों का विरोध करने लगें। पेट के रोगी हो जायें। तलाक की नौबत आ जाये। ठीक–ठाक चलता कारोबार अचानक ठप्प पड़ जाये। दर–दर भटकने की नौबत आ जाये। रात को नीद ना आये। बुरी आदतों पर पैसा खर्च होने लगे। जीवनसाथी का गर्भपात हो जाये।

यदि आपने पूजा का स्थान बदला, लकड़ी का कोयला अपने घर की छत पर रखा, सीढ़ियों के नीचे रसोई बनायी, अपनी माता की उम्र की महिलाओं के साथ संबंध रखा तो आपका राहु कमजोर हो सकता है।

आपको निम्न स्थितियों में राहु के उपाय अवश्य करना चाहिए --

यदि आपका राहु किसी कारणवश कमजोर हो जाता है तो आपको 34 साल की आयु के दौरान परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। आपकी माता को भी परेशानी हो सकती है। आपके ससुराल और ननिहाल वालों को अशुभ परिणाम प्राप्त हो सकते हैं। आप अपनी रखैल पर धन बर्बाद करने के बाद अपना जीवन बर्बाद कर सकते हैं। आप किसी दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं। आप शेखचिल्ली की तरह दिन में सपने देख सकते हैं। आपकी माता को कष्ट हो सकता है। आपको सवारी का सुख प्राप्त नहीं हो सकता है। आप सुनहरे सपनों में खोये रह सकते हैं। यदि घर की छत बदलनी पड़े तो पुराना मलबा मिलाकर छत बनवायें, अन्यथा अशुभ फल प्राप्त हो सकता है। अपने से बड़ी उम्र की स्त्री के साथ आपके अनैतिक संबंध हो सकते हैं। ऐसे संबंध की वजह से आपका धन एवं परिवार नष्ट हो सकता है।

आपको राहु के अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करना चाहिए --

400 ग्राम या 1 किलो धनियां बहते पानी में सात बुधवार तक बहायें। हरिद्वार में गंगा स्नान करें। घर की चारदीवारी के अंदर किसी भी तरह का गंदा पानी जमा न होने दें। सरस्वती जी की पूजा–अर्चना करें। चार किलो सिक्के एवं श्री फल जल में प्रवाहित करें।

कुण्डली में अन्य ग्रहों एवं भावों का प्रभाव और उनका उपाय --

आपकी कुण्डली में राहु के साथ बैठे ग्रहों या राहु पर दृष्टि डालने वाले ग्रहों का भी प्रभाव पडता है। इस भाग में उन सारी स्थितियों का पता लगाया गया है एवं उनके परिणाम और उपाय दिए गये हैं।

आपकी कुण्डली में राहु चौथे भाव में स्थित है एवं शुक्र कुण्डली में शुभ भाव में है। आपकी शादी के बाद से आपके ससुराल में धन की बढ़ोतरी हो सकती है, जिससे आपको भी फायदा हो सकता है।

आपकी कुण्डली में राहु चौथे भाव में स्थित है एवं सूर्य, मंगल या बृहस्पति दसवें भाव में स्थित है। आपको 24 वर्ष की आयु के बाद प्रचुर मात्रा में धन की प्राप्ति होगी। आपकी गरीबी खत्म हो जाएगी।

कुण्डली में केतु देव का प्रभाव और उपाय

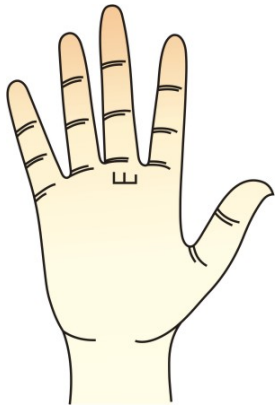

निम्न समयावधि में आपको केतु का अच्छा या बुरा फल प्राप्त होगा

(10/08/1953 से 08/08/1956 तक, 09/08/1988 से 09/08/1991 तक, 10/08/2023 से 09/08/2026 तक)

आपकी जन्मकुंडली में केतु दसवें घर में स्थित है। आप धनवान होंगे और हर तरह की सुख–सुविधाओं से परिपूर्ण होंगे। आपका जीवन खुशहाल होगा और आपको संतान सुख की प्राप्ति होगी। आपको पुत्र संतान की तुलना में कन्या संतान से अधिक सुख प्राप्त होगा। आप खेल जगत में विश्व प्रसिद्ध बन कर ख्याति प्राप्त कर सकते हैं। आपके धन में बढ़ोत्तरी होगी। आप शंकालु स्वभाव वाले हो सकते हैं। आपके जीवन में 40 वर्ष की आयु तक समय मिला–जुला फल देगा। इसके बाद का समय बहुत ही शुभ और सुखकारक सिद्ध होगा। आपकी आर्थिक स्थिति पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा। कुल मिलाकर आपका जीवन सुखमय रहेगा। आप काफी चालाक हो सकते हैं एवं अच्छे–बुरे की पहचान की क्षमता होगी। आपको पुत्र सुख प्राप्त होगा। अपने भाई के साथ कभी बुराई न करें, आपको कभी आर्थिक तंगी का सामना नहीं करना पड़ेगा। अपने भाई की गलतियों को नजर अंदाज या क्षमा करते रहें। आपको अपना चाल–चलन ठीक रखना चाहिए। आप मौके का फायदा उठाना जानते हैं। हालाँकि आपकी नीयत ठीक होगी। आपका चाल–चलन उत्तम होगा।

आपको केतु के शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न परहेज करना चाहिए --

अपना चाल–चलन ठीक रखें। भाई से झगड़ा न करें। माता से धोखा–ठगी न करें। कुत्तों को न मारें।

निम्न शारीरिक/पारिवारिक/आर्थिक अथवा सामाजिक लक्षणों के आधार पर भी केतु के अशुभ होने का अनुमान लगाया जा सकता है।

औलाद को सांस से संबंन्धित बीमारी लग जाये। शुगर (मधुमेह) की बिमारी हो जाये। औलाद की पैदाइश में परेशानी हो। जोडों का दर्द परेशान करे। दीवानी मुकदमे में पैसा खर्च हो। कुत्तों से डर लगने लगे। मकान की छत गिर जाये। भाई की तरफ से परेशानी हो। अचानक ही फोडे–फुंसी से परेशान हो जायें।

यदि आपने अपने भाई से झगड़ा किया, पराई स्त्रियों से अनैतिक संबंध रखे तो आपका केतु मंदा हो सकता है।

आपको निम्न स्थितियों में केतु के उपाय अवश्य करना चाहिए --

यदि किसी कारण वश केतु मंदा हो गया तो आपका चाल–चलन ठीक नहीं हो सकता है। आप या तो नपुंसक हो सकते हैं या आपकी पुत्रियां अधिक हो सकती या आपको पुरुष संतान नहीं हो सकती है या संतान गोद लेने की नौबत आ सकती है। इसकी वजह से

आपको बहुत परेशानियां झेलनी पड़ सकती हैं। आपके भाई आपको बर्बाद कर सकते हैं या आपके धन का दुरुपयोग कर सकते हैं। पराई औरत के साथ संबंध आपके दाम्पत्य सुख में बाधा पहुंचा सकता है। यह आपके जीवन के लिए घातक सिद्ध हो सकता है। आपको 48 वर्ष की आयु के आस–पास या माता की मौत के बाद पुत्र सुख मिल सकता हैं। आप दूसरों का एहसान नहीं मानेंगे।

आपको केतु के अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करना चाहिए ––

मकान की नींव में शहद एवं दूध दबायें। चांदी के बर्तन में शहद भरकर घर में रखें। 48 साल की उम्र के बाद अपने घर में कुत्ता पालें। गणेश जी की पूजा करें। 9 वर्ष से छोटे लड़कों को भोजन करायें। काले एवं सफेद तिल को नाले में प्रवाहित करें। कानों में शुद्ध सोने की ननातियां पहनें। काला–सफेद कंबल धर्म स्थान में दें।

कुण्डली में अन्य ग्रहों एवं भावों का प्रभाव और उनका उपाय ––

आपकी कुण्डली में केतु के साथ बैठे ग्रहों या केतु पर दृष्टि डालने वाले ग्रहों का भी प्रभाव पडता है। इस भाग में उन सारी स्थितियों का पता लगाया गया है एवं उनके परिणाम और उपाय दिए गये हैं।

आपकी कुण्डली में केतु दसवें भाव में स्थित है एवं शनि शुभ भाव में है। आपमें मिट्टी को सोने के भाव बेचने की क्षमता होगी। आपकी संतान योग्य होगी। दो सोने के ईंट अपने घर के लॉकर में रखें।

आपकी कुण्डली में केतु एवं मंगल दसवें भाव में एक साथ स्थित हैं। आपका चरित्र संदेहास्पद हो सकता है। आपके गृहस्थ जीवन एवं रोजगार में समस्यायें हो सकती हैं। अशुभ असर को दूर करने के लिए अपने घर की नींव में चांदी एवं शहद दबायें। व्यापारिक यात्रा, या काम पर जाने से पहले 11 रुपये किसी गुप्त जगह पर रख कर चले जाएं। आपको हर हालत में सफलता प्राप्त होगी। वापिस आने पर इन गुप्त रुपयों को किसी गरीब को दान में दें।

यदि आपकी संतान पर केतु का अशुभ प्रभाव पड़ रहा है तो घड़े की शक्ल के चांदी के बर्तन में शहद भर कर रखने से शुभ प्रभाव पड़ेगा। यदि फिर भी अशुभ प्रभाव कम नहीं होता है तो उस बर्तन को किसी सुनसान जगह पर मिट्टी के अंदर दबायें। 48 वर्ष की उम्र के बाद घर में कुत्ता पालना लाभदायक होगा।

लाल–किताब के उपाय करने के नियम और सावधानियाँ

(1) एक दिन में केवल एक ही उपाय करें। एक उपाय समाप्त हो जाने के बाद अगले दिन से दूसरा उपाय शुरू करें।

(2) सभी उपाय सूर्योदय के बाद एवं सूर्यास्त से पहले करें। जो उपाय सूर्यास्त के बाद करने के लिए लिखा गया है, केवल उसे ही सूर्यास्त के बाद करें।

(3) सबसे पहले छोटे उपाय, जो एक दिन के होते हैं, उन्हें करना चाहिए। यदि आपकी कुण्डली में कोई ऋण है तो पहले ऋण वाले उपाय करें।

(4) कुछ उपाय सप्ताह, मास या 43 दिन लगातार करने होते हैं, इन उपायों को बाद में शुरू करें। ध्यान रखें कि ऐसे उपाय बीच में न टूटें, अन्यथा शुभ फल प्राप्त नहीं होंगे।

(5) यदि लंबे उपाय करते समय किसी कारण से उपाय बीच में बंद करना पड़े तो उस दिन उपाय करने के बाद थोड़े से चावल दूध से धोकर सफेद कपड़े में बांधकर अपने पास रख लें और जब दुबारा उपाय शुरू करना हो तो वह चावल धर्म स्थान में दे दें या बहते पानी में प्रवाहित कर दें। उसके बाद उपाय शुरू कर दें। ऐसा करने से उपाय अधूरा नहीं माना जाएगा और पूरा फल प्राप्त होगा।

(6) मासिक धर्म के दौरान महिलायें मंदिर जाने वाले उपाय न करें, इस दौरान अपने खून से संबंधित परिवार के किसी सदस्य से उपाय करवायें।

(7) एक दिन वाले उपाय चौथ, नवमी एवं चतुर्दशी को कर सकते हैं, लेकिन लंबे चलने वाले उपाय इन तिथियों को शुरू न करें।

(8) जल प्रवाह की कोई भी वस्तु सिर पर सात बार घुमाकर जल प्रवाह करें।

(9) यदि कोई उपाय जिंदगी भर के लिए करना है तो पहले उसे शुरू कर साथ––साथ एक––एक करके दूसरे उपाय करें।

(10) जिस उपाय को किसी खास दिन शुरू करने के लिए न कहा गया हो, उस उपाय को करने के लिए किसी दिन या तिथि जैसे अमावस्या, पूर्णिया आदि का विचार न करें।

(11) जिस चीज/औजार से उपाय करें या जो भी सामान उपाय के लिए ले जायें, उसे वहीं छोड़ दें। लंबे चलने वाले उपाय में औजार आखिरी दिन छोड़ें।

(12) जो चीज जल प्रवाह करें या धर्म स्थान में दें, उस दिन उस चीज का सेवन न करें।

(13) उपाय के दिनों में शारीरिक संबंध स्थापित न करें।

Disclaimer

The calculations, future predictions, and remedies given in this Astrological Report are all based on the principles of either on Vedic Astrology, KP System, Jaimini or Lal Kitab, Numerology which are the result of consulting and engaging highly learned astrologers and astrology practitioners. This Report will prove to be highly useful for astrologers and practitioners of Astrology. We earnestly request the common users of this Report that they should not follow the Lal Kitab and or other prediction/remedies given in this Report without consulting a learned astrologer or an expert on this subject. Failing to do so might lead you to unexpected results which may or may not be favorable towards your well-being.

www.lalkitabnadi.com/MindSutra Software Technologies makes no warranty about the accuracy of any data contained herein, and the native is advised to not to take as conclusive any prediction generated for him. If you follow the advice given in this report you do so at your own risk, www.lalkitabnadi.com/ MindSutra Software Technologies or any of its associates are not responsible for the consequence of any event or action.

www.lalkitabnadi.com/MindSutra Software Technologies shall not stand liable for any damages or harm done.

All disputes are subject to New Delhi Jurisdiction only.

Wishing the very best – prosperity and happiness.